Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

तितिक्खं परमं णच्चा।

तितिक्षा मोक्ष का परम साधन है।

✽✽✽

परिग्गहे णिविट्ठाणं,
वेरं तेसिं पवड्ढई।

जो परिग्रह के अर्जन, संरक्षण और भोग में रत हैं, उनका वैर बढ़ता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 36 • 12 - 18 जून, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 10-06-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

मानव जीवन में सेवा व साधना दोनों जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

सफाले, (महाराष्ट्र) ४ जून, २०२३

आचार्यश्री भिक्षु के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ सफाले पधारे। धर्मसभा में पावन पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि दसवेंआलियं आगम में एक जागृति का संदेश दिया गया है कि शरीर सक्षमता के रहते-रहते धर्म का समाचरण कर लो।

आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, आत्मा अलग है, शरीर अलग है। पर दोनों मिले हुए हैं। शरीर की सक्षमता रहती है तो धर्म की साधना में सहयोग मिल सकता है। शरीर की अक्षमता तीन रूपों में हो सकती है, जब बुढ़ापा आ जाए, शरीर रोगग्रस्त और इंद्रिय शक्ति क्षीण हो जाए। इन तीनों स्थितियों में धर्माराधना में असक्षमता आ सकती है।

शरीर की सक्षमता से सेवा कार्य अच्छा हो सकता है और भी कार्य किया जा सकता है। ये शरीर एक नौका है, जीव नाविक है। यह संसार अरणव है, इसे महर्षि लोग पार पा जाते हैं। नौका निश्छिद्र हो तो पार पहुँचाने वाली हो सकती है। इस आत्मा में आश्रव रूपी छिद्र रहेगा तो यह नौका डुबाने वाली बन सकती है।

संवर और निर्जरा हमारी ठीक चले तो भवसागर पार हो सकता है। यह मानव जीवन दुर्लभ कहा गया है, पर हमें उपलब्ध है। इसका बढ़िया उपयोग करने का प्रयास करें। बालावस्था में साधु बनना बहुत अच्छी बात है। मानव जीवन में साधना करना बड़ी बात है और सेवा एक बड़ा धर्म है। स्वाध्याय-ध्यान से भी तपस्या की जा सकती है। श्रावक सुमंगल साधना की भी आराधना करें।

जो सेवा धर्म में परायण करते हैं, वे ज्ञानी-ध्यानी से भी महान हैं। जब तक शरीर सक्षम है, तब तक सेवा का दायित्व पूरा कर लो। जितना तपस्या-सेवा से खजाना भर लें, वो अपना है। पाथेय साथ में है तो लंबा रास्ता पार हो सकता है। धर्म का टिफिन लिया है, तो आगे भी अच्छा हो सकता है। अंतिम समय में तो आदमी संथारा साधना धर्म में आए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सफाले में संतों का समागम हुआ है। पूज्यप्रवर से हरि कथा का श्रवण भी हुआ है। मनुष्यता की श्रेष्ठता वही कह सकता है, जिसमें निर्णय की शक्ति है। व्यक्ति में शक्ति है, तो वह विकास कर सकता है। जिसमें सोचने-समझने की शक्ति है, वह विकास कर सकता है। औत्पति की बुद्धि तो और विशेष होती है।

श्रमण संघ स्थानकवासी संघ से डॉ० साध्वी विराग साधना जी आदि कई साध्वियाँ पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आईं। साध्वी विराग साधना जी ने कहा कि संतों का समागम कुछ समय के लिए होता है। लाडनूं से मैंने एम०ए० और पीएचडी की है।

लाडनूं बड़ी महत्त्वपूर्ण युनिवर्सिटी है। जब भी आप धर्म आराधना करोगे उसका आनंद लंबे समय तक मिलता है। हम रास्ता बदलकर गुरुदेव के दर्शन करने आए हैं।

मुनि महेंद्र कुमार जी की सेवा करने वाले डॉ० मुनि अजीत कुमार जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और अपनी भावना अभिव्यक्त की। सफाला के बाल योगी मुनि प्रिंस कुमार जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मुनि महेंद्र कुमार जी हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ और आगम मनीषी संत थे। मुनि अजित कुमार जी को अग्रणी की वंदना करवाई। मुनि जंबू कुमार जी को राज में साझ के अग्रणी की वंदना करवाई।

मुनि अजित कुमार जी ने आगम जंबु प्रज्ञप्ति की संस्कृत प्रति पूज्यप्रवर को अर्पित की। भगवती सूत्र का सातवाँ व आठवाँ खंडमी प्रेम में जा चुका है, नौवाँ खंड पूरा हो चुका है, शीघ्र ही प्रेस में जाने वाला है। तीनों की प्रतियाँ पूज्यप्रवर को समर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। अंग्रेजी भाषा में भी तीसरे खंड का कार्य चालू है। पाँचों संतों ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि मोहजीत कुमार जी ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

(शेष पृष्ठ २ पर)

तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता प्रेक्षाप्रणेता
आचार्यश्री महाप्रज्ञजी
के 104वें जन्मदिवस पर श्रद्धासिक्त वंदन
आषाढ़ कृष्ण-13 (16 जून 2023)

ध्यान का प्रयोग नियमित करें : आचार्यश्री महाश्रमण

पारगाँव, (महाराष्ट्र) ५ जून, २०१३

ज्योतिर्मय ज्योतिचरण आचार्यश्री महाश्रमणजी अणुव्रत यात्रा के साथ पार गाँव की आमची शाला में पधारे। जगतारक ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी झूठ बोलता है, उसके पीछे दो कारण हो सकते हैं–एक तो किसके लिए झूठ बोलता है, आत्मार्थ या परार्थ या तो खुद के लिए आदमी झूठ बोलता है या दूसरों के लिए झूठ बोलता है।

दूसरा भावात्मक कारण है। दो भावात्मक कारण हैं–गुस्सा या भय। और भी कारण हो सकते हैं। झूठ बोलना एक प्रवृत्ति है। उसकी वृत्ति अंदर होती है। कार्य को समाप्त करने के लिए कारण को मिटाना होगा। संवर और निर्जरा मुक्ति के कारण हैं। मोक्ष मुक्ति है। आश्रव दुःख का कारण है। प्रेक्षाध्यान से हम राग-द्वेष मुक्त बन सकते हैं।

उपयोग आत्मा चेतना का व्यापार है, यह प्रखर बने। ध्यान का प्रयोग हो सके, तो रोजाना करें। अहिंसा, सत्य, ध्यान आदि अध्यात्म का परिवार है। इनकी साधना से ऊर्ध्वारोहण हो सकता है। अपने भीतर के घर में रहने का प्रयास करें। बाहर का शरीर तो अस्थायी है। रहो भीतर, जीयो बाहर। पद्म पत्र की तरह घर में रहते हुए भी निर्लिप्त रहे। धर्म की साधना चलती रहे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 जून, 2023

✦ *वह व्यक्ति निष्प्राण है, जिसके जीवन में ईमानदारी का प्राण नहीं है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

वाणी का संयम रखना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

बोइसर, ३१ मई, २०२३

प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी अणुव्रत सेना के साथ दो दिवसीय प्रवास हेतु बोइसर के यू०एस० ओस्तवाल एज्युकेशन सोसायटी के प्रांगण में पधारे।

परम पुरुष ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम के श्लोक में वाणी संयम रखने, आक्रोश को असफल करने और समता के बारे में बताया गया है। आदमी के पास भाषा-लब्धि है। शास्त्रकार ने कहा है कि बिना पूछे कुछ भी न बोलें। अनावश्यक न बोलें जो आवश्यक हो वही बोलें।

मौन रखना अच्छा है। अनावश्यक बोलना मितभाषिता हो जाती है। वाणी संयम के बारे में चार बातें खास हैं। परिमित बोलना। अच्छा आदमी कभी निराधार बात नहीं लिखता है। जो आवश्यक नहीं है, वो बोला न जाए। जुबान पर लगाम रखना कठिन हो सकता है।

मुखरता लघुता करने वाली होती है, मौन आदमी को बड़ा बनाने वाला होता है। जैसे नुपुर पैरों में पहने जाते हैं और हार गले में। दूसरी बात है—मधुरभाषिता। कटु बोलना काँटे के समान है। मीठा बोलना वशीकरण मंत्र है। तीसरी बात है—यथार्थ बोलना। किसी पर झूठा आरोप न लगाएँ। चौथी बात है—सोचकर बोलना। पहले तोलो-फिर बोलो। सुविचारिता रहे।

ये चतुर्यामी वाणी की कला, वाणी का संयम है। वाणी का अच्छा उपयोग करने का प्रयास हो। अभ्याख्यान हमारे द्वारा न हो जाए। भाषा का सदुपयोग करें, औरों का कल्याण करें। वक्ता अच्छे ढंग से बात बताए और श्रोता अच्छे ढंग से बात सुने। वक्ता की वाणी के साथ जीवन का व्यवहार भी बोलना चाहिए। हम वाणी का अच्छा उपयोग करें, यह काम्य है।

आज बोइसर आए हैं अब तो मुंबई निकट हो रही है। यहाँ अच्छे श्रद्धा के परिवार हैं। जैन-जैनेत्तर में धार्मिक-आध्यात्मिक चेतना स्फुरित रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर देश के अनेक प्रांतों में भ्रमण कर वर्तमान में महाराष्ट्र में परिवर्जन कर रहे हैं। जहाँ पधारते हैं, लोग आचार्यप्रवर का अभिनंदन करते हैं। जो साधु हैं, वो अभिनंदन के योग्य हैं। जिसके मुखारविंद पर प्रसन्नता दिखाई देती है, संयम उज्ज्वल होता है, वह व्यक्ति अभिवंदनीय होता है। पूज्यप्रवर की वाणी से अमृत का निर्झर होता है।

पूज्यप्रवर के अभिवंदन में स्थानीय सभाध्यक्ष झुमरमल बाफना, तेयुप अध्यक्ष राकेश राठौड़, राजस्थान जैन संघ के उमराव ओस्तवाल, वोइसर संघ संचालक विनोद बाजपेयी, पाटीदार समाज से विजय पटेल, तेरापंथ कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संतों की संगत व वाणी का लाभ उठाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

वाणगाँव, ३० मई, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर अपनी धवल सेना के साथ वाणगाँव स्थित वाण गाँव एज्युकेशन सोसायटी के सरस्वती विद्यालय में पधारे।

अमृत पुरुष ने अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि हमारे पास कर्णेन्द्रिय, श्रोतेन्द्रिय है। श्रोतेन्द्रिय जिनके पास होती है, वह प्राणी पंचेन्द्रिय ही होता है। हमारे पास कान दो हैं, मुँह एक है तो शिक्षा दी गई कि सुनो ज्यादा, बोलो कम। एक वाणी ऐसी होती है, जो स्थिति को बिगाड़ दे और एक वाणी ऐसी होती है कि वह कल्याणी बन सकती है।

एक प्रसंग से समझाया कि दूत योग्य होना चाहिए। दूत काम बना सकता है, तो बिगाड़ भी सकता है। वाणी ऐसी होनी चाहिए जिसमें माधुर्य हो, यथार्थत्य हो और मौके पर मौके के अनुरूप बात कही जाए। हम सुनें ज्यादा, बोलें कम। संतों की वाणी-संगत अच्छी होती है। उसका अच्छा लाभ उठाएँ।

हम सुनकर ज्ञात कर लेते हैं, सुनकर कल्याण और पाप को भी जान लेते हैं। फिर जो श्रेयकर है, उसका अच्छा आचरण करना चाहिए। तीर्थंकर तो परमज्ञानी होते हैं। पर वर्तमान में भरत क्षेत्र में तो तीर्थंकर विद्यमान नहीं हैं। हम आचार्य से शुद्ध सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें।

वाणी जो कल्याणी होती है, वो समाधान देने वाली होती है। दुखी आदमी को हम चित्त समाधि पहुँचाने का प्रयास करें। हमारी वाणी से किसी को कष्ट न हो। हमारी वाणी प्रिय हो। यथार्थ और प्रिय हो तो भाषा विभुषा बन जाए। वाणी शिष्ट, मिष्ट और विशिष्ट हो। वाणगाँव की जनता जैन-अजैन सभी में धार्मिक चेतना रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अजयराज फूलफगर ने आज २५ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। जैन समाज से सुंदर डागा, जैन सकल संघ से भागचंद धोका, स्कूल के चेयरमैन आनंद भाई एवं मुकेश कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल ने गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ध्यान का प्रयोग नियमित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कुछ समय निकालकर साधना में अपने आपसे नियोजित करने का प्रयास करें। आधि, व्याधि, उपाधि दूर हो सकती है। समाधि को प्राप्त कर सकते हैं। हम ध्यान के द्वारा भीतर की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें, तो हमारे लिए कल्याणकारी बात हो सकती है। पूज्यप्रवर ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुंबई से समागत प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। स्थानीय सरपंच अंकुशली झाबक ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। व्यवस्था समिति व अणुव्रत समिति द्वारा सरपंच का सम्मान किया गया। पूज्यप्रवर ने प्रेक्षा प्रशिक्षकों को आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मानव जीवन में सेवा व साधना...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूज्यप्रवर के स्वागत में सफाले सभाध्यक्ष राजेश चोरड़िया, ममता परमार, नवीन मांडोत, विद्यालय के ट्रस्टी कांतिलाल डोसी (ग्रामीण शिक्षण संस्था) ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। कन्या मंडल द्वारा तेरापंथ पर सुंदर प्रस्तुति हुई। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में साध्वी गुणवती जी एवं साध्वी सूरजकंवरी जी की संयुक्त जीवनी-तेजस्विता और शीतलता का संगम जैन विश्व भारती द्वारा लोकार्पित हुई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि जंबूकुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी और मुनि सिद्धकुमार जी ने भी अपनी भावना-अनुभवों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विलक्षण व्यक्तित्व का नाम गुरुदेव तुलसी

सुनाम।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में गुरुदेव तुलसी की २७वीं पुण्यतिथि का कार्यक्रम समायोजित किया गया। इंद्रा बस्ती सुनाम तेरापंथ भवन के विशाल हॉल में साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि बीसवीं सदी की विरल विभूति गुरुदेव तुलसी का व्यक्तित्व विलक्षण था। जिनका कर्तृत्व अनुपम था। प्रयोग धर्मा जीवन का नाम था तुलसी।

इस अवसर पर साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी केवलप्रभा जी, साध्वी हेमंतप्रभा जी ने तुलसी के व्यक्तित्व को उजागर करते हुए संगीत स्वरलहरी से परिषद को भावविभोर कर दिया। साध्वी हेमंतप्रभा जी ने अपने विचार रखे।

पंजाब प्रांतीय सभाध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल, स्थानीय, सभाध्यक्ष रामस्वरूप जैन, रामलाल गोयल, नव निर्वाचित तेयुप अध्यक्ष अरिहंत जैन, महिला मंडल मंत्री सुनीता जैन, सोना जैन ने गुरुदेव तुलसी को अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम मनाया गया। संचालन सभा मंत्री सुरेश जैन ने किया। रात्रि में 'एक शाम तुलसी के नाम' भक्ति संध्या का कार्यक्रम उत्साहवर्धक रहा।

युग द्रष्टा युग स्रष्टा थे आचार्यश्री तुलसी

टालीगंज, कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में श्रद्धार्पण समारोह व दीक्षार्थी मंगल भावना कार्यक्रम साउथ सिटी इंटरनेशनल स्कूल में हुआ। युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी विषय पर बोलते हुए मुनिश्री जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा, शांति के पैगंबर व गतिशील धर्मसंघ के ६वें अधिशास्ता थे। वे द्रष्टा थे। उन्होंने युग को देखा, उस समय की परिस्थितियों का आकलन कर चारित्रिक उन्नयन व नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य तुलसी युगस्रष्टा थे। उन्होंने युग का निर्माण किया। धर्म का संकीर्ण स्वरूप बदला उन्होंने अध्यात्म, नैतिकता, उपासना धर्म के तीन अंग बताए। उपासना पद्धति अलग-अलग हो सकती है।

गुरुदेव तुलसी ने लंबी-लंबी यात्राएँ करके मानवता की सेवा की है। समण श्रेणी उनके उर्वरा मस्तिष्क की देन है। मुनिश्री ने दीक्षार्थी बहनों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष रतन दुगड़ ने युग को पहचानने वाला, युग को देखने वाला, वह युग द्रष्टा होता है। जो युग का निर्माता है। नई दिशा की तरफ ले जाता है, वह युग स्रष्टा होता है। आचार्य तुलसी ने समाजोत्थान के अनेक रचनात्मक कार्य किए। कार्यक्रम के अतिथि तेरापंथ महासभा के कोषाध्यक्ष मदन मरोठी, तेरापंथ महासभा के पूर्व ट्रस्टी भंवरलाल बैद, अभातेयुप के सहमंत्री अनंत बागरेचा, दीक्षार्थी संजना पारख व अंकिता चोरड़िया, माणक डागा, मुमुक्षु खुशी सुराणा, साउथ इंटरनेशनल स्कूल के ट्रस्टी राजेंद्र बच्छावत, मनन बागरेचा आदि ने विचार रखे।

तेरापंथ सभा के सदस्यों द्वारा मधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम की बहनों के मंगल गीत से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक पारख व आभार राजीव दुगड़ ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी व माणक डागा ने किया। सभा द्वारा दीक्षार्थी बहनों व अतिथियों का सम्मान भी किया गया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०४वें जन्म दिवस पर विशेष

महामहिम आचार्य महाप्रज्ञ

❐ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ❐

आत्मा साधना के साथ जन-मानस को कृतार्थ किया था जो आज भी विश्व मानव के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। उनका विराट व्यक्तित्व और कर्तृत्व संपूर्ण जैन समाज ही नहीं बल्कि मानव मात्र के लिए पथ दर्शक है। उन महान विभूति का नाम है–तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ। आचार्यश्री महाप्रज्ञ अनेक विशेषताओं को लिए हुए थे। वे अपने दीक्षा गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। दीक्षित होते ही पूज्य गुरुदेव कालूगणी ने ज्ञानार्जन हेतु अपने सुशिष्य मुनि तुलसी को सौंप दिया। आचार्य महाप्रज्ञ का जैसा समर्पण भाव कालूगणी के प्रति था वैसा ही शिक्षा गुरु मुनि तुलसी के प्रति रहा। उनकी एक ही भावना थी 'आणाए मामगं धम्मं आगम का यह वाक्य उनका जीवन सहचर बन गया अर्थात् गुरु आज्ञा ही मेरा परम धर्म है। इसीलिए जब एक बार गुरु तुलसी ने आचार्य बनने के बाद पूछा–क्या तुम मेरे जैसा बनोगे तो महाप्रज्ञ ने सहज भाव से कहा–आप बनाओगे तो बन जाऊँगा। यह था उनका समर्पण भाव। उन्होंने गुरु के प्रति बहुमान और अटूट श्रद्धा का भाव रखा और उसी में अपूर्व आनंद की अनुभूति की।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनमें साधना होती है पर विद्वता नहीं, तो कुछ में विद्वता होती है पर साधना नहीं आचार्य महाप्रज्ञ में साधना और विद्वता दोनों का समावेश था। उन्होंने ज्ञानार्जन के द्वारा विद्वता हासिल की तो प्रेक्षाध्यान के नित नए प्रयोगों से गहन साधना की। साधना की गहराई में उतरकर व अन्वेषण कर अनेक उपलब्धियाँ हासिल की। इतने उद्भट विद्वान होने के बावजूद वे कभी लौकेषणा में नहीं गए। वे एक ऐसे अनगार थे, जिनमें अहंकार और आवेश का भाव नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे कि मुझे पता नहीं कि कभी जीवन किसी बात को लेकर मेरे मन में कभी अहंकार अथवा आवेश के भाव आए हो। ऐसे व्यक्ति ही साधना के क्षेत्र में विकास कर सकते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ऋजुप्राज्ञ थे। सरलता तो उनके रग-रग में थी। बचपन से ही वे भद्र प्रकृति थे। सरलता के साथ उनमें सहनशीलता का भी समावेश था। जैसा कि आचार्य तुलसी ने अनेक परिस्थितियों को समभाव से सहन किया था। उनके साथ रहकर आचार्य महाप्रज्ञ ने भी बहुत कुछ सहन किया। सरलता और सहनशीलता के सद्गुण ने ही अपने गुरु तुलसी के दिल में एक विशिष्ट स्थान बना लिया था। यों कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी कि वे गुरुदेव श्री तुलसी के दिल में उतर गए। अनुकूल परिस्थिति में उदासीन भाव और प्रतिकूलता की स्थिति में समभाव रखा और यही बन गया, उनका महान लक्ष्य।

यद्यपि वे एक धर्मसंघ के आचार्य बने पर उनका चिंतन सदैव ही असांप्रदायिक ही रहा। संप्रदाय को वे संघीय व्यवस्था मानते थे। उनके कार्य जैन शासन की प्रभावना तथा मानवता की सेवा के संदर्भ में थे। इसी बात को सामने रखकर सदा अपने प्रवचनों में सार्वभौम और सार्वजनीय हितोपदेश के रूप में कराते थे। यहाँ तक जीवन में नवमें दशक में उन्होंने अहिंसा यात्रा की। 'सत्वेषु मैत्री' की प्रबल भावना से उन्होंने पंचवर्षीय यात्रा के दौरान जन-जन को नैतिकता, सद्भावना और भाईचारे का संदेश दिया। जातिवाद प्रांतवाद, संप्रदायवाद व्यक्ति और समाज में अलगाव पैदा करता है। अतः इसे कभी महत्त्व नहीं दिया। अतः भारत की अनेक महान हस्तियाँ उनके चरणों में आकर मार्गदर्शन प्राप्त करती रही चाहे वे राजनेता, समाजनेता, धर्मगुरु आदि किसी संस्था या संघ से जुड़े क्यों नहीं थे। एक बार राष्ट्रपति अब्दुल कलाम उनके चरणों में आए तो महाप्रज्ञ ने एक ऐसी बात कही कि महाप्रज्ञ के फैन हो गए। महाप्रज्ञ ने कहा कलाम साहब आपने अनेक मिसाईलें बनाई हैं, किंतु अब शांति की मिसाईल बनाईए। इस बात से वे इतने प्रभावित हुए कि प्रतिवर्ष महाप्रज्ञ के चरणों में आने लग गए। जब सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास करवा रहे थे तो वे अपना जन्मदिन मनाने व आशीर्वाद लेने पहुँच गए और एक शानदार कार्यक्रम आयोजित हुआ। फिर एक पुस्तक का निर्माण हुआ जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ और अब्दुल कलाम की रचनाओं को सम्मिलित किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा आगम संपादन के साथ साहित्य के क्षेत्र में दो सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनका वह साहित्य आज भी जन-जन का मार्गदर्शन कर रहा है। हम उनके जन्मदिन पर यही भावना करते हैं कि उनके द्वारा प्राप्त अवदानों से मार्गदर्शन से अपने साधना वैभव को बढ़ाते रहे तथा उनकी आचार-निष्ठा, संयमप्रियता, सरलता, गंभीरता, सहिष्णुता के साथ मानवता, नैतिकता व भाईचारे की भावना को विकसित कर सकें। हम भी जीएँ सरलता से चलें, सजगता से कहें, सुगमता से रहें, निस्पृहता से, सहें सहनशीलता व समता से मानें, कृतज्ञता से उन कुशल नेतृत्व प्रदान कर्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति उनके १०४वें जन्मदिन पर कृतज्ञ भाव से चैतन्य का वंदन-वंदन-वंदन।।

क्या कहूँ, कैसे कहूँ बात सूरज की दीपक की जुबानी है।
जो कहूँ जितना कहूँ अल्प ही होगा, सागर की गाथा, बूँद की कहानी है।।

केवल बाहरी दुश्मन ही नहीं भीतरी दुश्मन को भी बाहर निकालें

किशनगंज।

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी ने सशस्त्र सीमा बल किशनगंज में 'जीवन जीने की कला' पर कहा कि हम लोग आपके संस्थान में आए। हमारा उद्देश्य आत्म साधना करना, दूसरा कार्य जन-कल्याण। जनता को सही मार्गदर्शन देना। आपमें और हमारे में काफी समानताएँ भी हैं। हम आत्मा की सुरक्षा करते आप देश की सुरक्षा करते। हम पूर्ण अहिंसा का पालन करते हैं, आप सशस्त्र देश की सुरक्षा का दायित्व निभाते हैं। व्यक्ति अपने मन से, विचार से हिंसात्मक कार्य कर लेता है। भाव को शुद्ध बनाएँ।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि हमारा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए कि मुझे कैसा जीवन जीना है। हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। हिंसा से किसी को भी नहीं जीता जा सकता। हम अपने जीवन को शांति से जीने के साथ-साथ दूसरों के जीवन में भी शांति देने का प्रयास करें।

अभातेयुप पूर्व महामंत्री मनीष दफ्तरी ने कहा कि आपका जीवन आपका उद्देश्य ऊँचा है। इसके साथ सुखी जीवन जीने का तरीका आ जाए तो व्यक्ति का उद्देश्य सार्थक हो जाता है।

डिप्टी कमांडर बसंत सिंह ने मुनिद्वय का स्वागत किया। तेयुप के अध्यक्ष अमित दफ्तरी ने आभार व्यक्त किया।

दंत चिकित्सा परीक्षण एवं तंबाकू निषिद्ध अवेयरनेस कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर।

रोटरी क्लब जयपुर साउथ और अणुव्रत समिति जयपुर के तत्त्वावधान में जयपुर पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल सत्य मार्ग हवा सड़क पर दंत चिकित्सा परीक्षण एवं तंबाकू निषिद्ध अवेयरनेस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कृष्ण कृपा डेंटल क्लिनिक के चिकित्सकों द्वारा विद्यार्थियों, अभिभावक तथा संपूर्ण स्टाफ का निःशुल्क दंत परीक्षण किया गया। चिकित्सकों द्वारा ब्रश करने की सही तकनीक का भी ज्ञान दिया गया।

तंबाकू के दुष्परिणामों पर भी उपयोगी जानकारी दी गई। जयपुर अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्ध द्वारा आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत सिद्धांत के अनुसार किसी भी व्यसन में लिप्त ना रहने के लिए प्रेरित किया गया तथा अणुव्रत के ११ सिद्धांतों के बारे में विस्तार से विवेचना की गई। रोटरी क्लब अध्यक्ष अश्विनी चॉबिसा की ओर से चलाए जा रहे एंटी ड्रग एवं एंटी टोबैको अभियान के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर रोटरी फोरवे टेस्ट एवं जल बचाओ अभियान भी प्रचार किया गया।

संत संस्कृति एवम् संस्कारों की सुरक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहते हैं

गाजियाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी का उपनगरों में भ्रमण के क्रम में गाजियाबाद के क्षेत्र, कौशाम्बी, वैशाली, रामप्रस्थग्रीन, चंद्रनगर, सूर्यनगर, रामपुरी एवं रामप्रस्थ में सतरह दिनों का प्रवास ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग, सार-संभाल की दृष्टि से उपलब्धि एवं रात्रिकालीन कार्यक्रम में सबने बढ़-चढ़कर भाग लिया। ऐसा प्रतीत हुआ, वर्षों से प्यासी धरती को सिंचन मिला है।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि संत संस्कृति एवं संस्कारों की सुरक्षा के लिए अपने समय, श्रम व शक्ति का नियोजन करते हैं। हमारी संस्कृति व हमारे संस्कार पुष्ट होते रहें, इसलिए गाँव-गाँ, नगर-नगर, डगर, डगर, घर-घर, द्वार-द्वार जाते हैं और सोए हुए लोगों को जगाते है और कहते हैं संस्कृति व संस्कारों के पहरेदार बनो। आज पाश्चात्य संस्कृति हमारी जड़ों को कमजोर कर रही हैं। हमारे संस्कार धूमिल हो रहे हैं। अगर पीढ़ी को बचाना है तो जागरूक बनें, अपने बच्चों को साधु-संतों के पास ले जाएँ, ताकि संस्कारों को पोषण मिल सकें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हमारा गाजियाबाद प्रवास लाभकारी रहा। हमारा बाजार अच्छा चला और माल भी अच्छा बिका। नवोदित गाजियाबाद सभा में अच्छा उत्साह है। सभाध्यक्ष सुशील सिपानी अपनी टीम के साथ सक्रिय हैं। गाजियाबाद सभा सुशील के नेतृत्व में आगे से आगे बढ़ती रहे। लक्ष्य को प्राप्त करें।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अनेक विधाओं में अपने भावों की प्रस्तुति दी।

सभाध्यक्ष सुशील सिपानी ने कहा कि वर्षों के बाद हमारे क्षेत्र को चारित्रात्माओं का इतना लंबा प्रवास मिला। साध्वीश्री जी ने एक-एक घर का संभाल है। जवान पीढ़ी को धर्म से जोड़ा है। आपने जो सिंचन दिया है, उसका फल ओसवाल भवन में देखने का मिलेगा। हम सभी साध्वीवृंद के श्रम को नमन करते हैं। पुनश्च जब भी मौका मिले हमारे क्षेत्र की सार-संभाल करना।

✦ *सत्य लगने वाली बात को भी शांति के साथ प्रस्तुत करो। आवेश अपने आपमें असत्य ही है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

किशनगंज।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा 'माता-पिता के प्रति हमारा दायित्व' भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी के अच्छे-अच्छे विचार प्रस्तुत किए। मानते तो सभी हैं, माता-पिता का जो उपकार है उनके प्रति हमारा दायित्व भी होता है कि उनके लिए जितना किया जाए वह कम है। वर्तमान में माता-पिता के प्रति लगाव कम होता जा रहा है। वह लगाव बचपन तक तो रहता है फिर धीरे-धीरे कम हो रहा है। अभिभावक का त्याग अपने आपमें अनुकरणीय है। माता-पिता अपनी संतान के लिए जितना करते हैं, कोई भी संतान उस जितना कभी नहीं कर सकती। माँ की सहनशीलता एवं पिता की कर्मशीलता अनूठी होती है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि माता-पिता की वसीयत सबको अच्छी लगती है, लेकिन उनकी नसीहत अच्छी नहीं लगती है। माता-पिता की बातें अच्छी नहीं लगती, अपितु दोस्तों की बातें अच्छी लगती हैं। माता-पिता पालन-पोषण, शिक्षित करके अपना कर्तव्य निभाते हैं, वैसे ही संतान भी अभिभावक के प्रति अपना दायित्व निभाए।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। महिला मंडल अध्यक्षा संतोष जैन ने विषय प्रस्तुति दी। जज लिपि मोदी, अंकिता जैन का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। प्रथम स्थान कमल कोठारी, द्वितीय स्थान युवराज जैन, स्वाति दफ्तरी, तृतीय स्थान ऋतु लोढ़ा एवं प्रियंका दफ्तरी ने प्राप्त किया। आभार ज्ञापन हर्षिला छोरियाँ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रचना बोथरा ने किया।

सामान्य बोध कार्यशाला का आयोजन

बेहाला-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेममं, बेहाला के तत्त्वावधान में जैन धर्म का सामान्य बोध कार्यशाला का आयोजन व्योम कॉम्पलेक्स में हुआ। जिसमें अच्छी संख्या में महिलाएँ उपस्थित थीं। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि इस युग के जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए हैं।

भगवान महावीर ने श्रावक और साधु के लिए आचार-संहिता दी। जो अणुव्रत और महाव्रत के नाम से पुकारी जाती है। साधु की साधना व श्रावक की साधना एक-दूसरे पर आधारित है। मुनिश्री ने आगे कहा कि जिनको मानने वाला जैन होता है। जैन धर्म कर्मवाद, आत्मवाद, समतावाद आदि में विश्वास रखता है। व्यक्ति जैसा कर्म करता है वैसा ही उसे फल मिलता है। अपनी आत्मा ही कर्ता है, अपनी आत्मा ही भोक्ता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, बेहाला की बहनों ने गीत से हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की बंगाल प्रभारी सोनम बागरेचा ने विचार रखे, दीक्षार्थी बहन संजना पारख ने संयम जीवन की महत्ता के बारे में बताया। स्वागत भाषण बेहाला तेममं की उपाध्यक्षा पुष्पा भुतोड़िया ने दिया। आभार व संचालन बेहाला तेममं की मंत्री महिमा कोठारी ने किया। सुनील नाहटा ने दीक्षार्थी बहन के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

रिश्तों में बढ़ता तनाव कार्यशाला का आयोजन

बेहाला।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार स्थानीय तेममं ने स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज योजना के अंतर्गत रिश्तों में बढ़ता तनाव कार्यशाला का आयोजन ग्रीनफिल्ड सिटी में किया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में रिश्तों का मूल्य है। रिश्तों के बिना घर-परिवार, समाज देश चल भी नहीं सकता, रिश्तों में स्नेह, प्रेम होता है तो परिवार स्वस्थ रहता है, परिवार स्वस्थ है, तो समाज देश स्वस्थ रहेगा। जहाँ स्वस्थता है वहाँ रिश्तों में मजबूती आएगी। बदलते परिवेश में रिश्तों में तनाव बढ़ रहा है। जहाँ तनाव है, वहाँ अलगाव है, खिंचाव है, समस्या है, अशांति है।

परिवार के रिश्तों में मधुरता रहे, ऐसा प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के गीत से हुआ। स्वागत भाषण तेममं की अध्यक्षा वीणा पारख ने किया। आभार व संचालन पुष्पा भुतोड़िया ने किया।

टीपीएफ पदाधिकारियों की सार-संभाल यात्रा

औरंगाबाद।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल क्षेत्र सार-संभाल के तहत औरंगाबाद पधारे तथा उनके साथ वेस्ट जोन के अध्यक्ष धनपत मालू भी पधारे।

पारिवारिक यात्रा के तहत राजेंद्र सेठिया 'जडगांववाला ज्वेलर्स', सुरेश सेठिया और महेंद्र मरलेचा उनके घर पर टीपीएफ एवं आध्यात्मिक चर्चा की।

इसके पश्चात तेरापंथ भवन में मीटिंग हेतु सर्वप्रथम इस मीटिंग में मंगलाचरण मंच संचालित टीपीएफ ज्वइंट सेक्रेटरी सीए अंकिता सेठिया ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल का स्वागत महिला मंडल अध्यक्ष अनामिका धोका और टीपीएफ अध्यक्ष पूजा बागरेचा ने किया। जोनल अध्यक्ष धनपत मालू का स्वागत सभा मंत्री आनंद दुगड़ और पूर्व तेयुप अध्यक्ष महावीर छल्लानी ने किया।

सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए बागरेचा ने अपनी कोर कमेटी टीम एवं सभी मेंबर्स का परिचय भी करवाया। उन्होंने छह-सात महीने में किए गए कार्यों का लेखा-जोखा भी राष्ट्रीय अध्यक्ष के समक्ष रखा।

इसके बाद वेस्ट जोन के अध्यक्ष धनपत मालू ने औरंगाबाद यूनिट के पिछले छह-सात महीने में किए गए कार्यों की जानकारी दी। इसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष ने टीपीएफ, औरंगाबाद को बेस्ट यूनिट का अवार्ड मिलने के लिए बधाई दी और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। टीपीएफ वेस्ट जोन के ज्वाइंट सेक्रेट्री अंकुर लुणिया ने सभी का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

इसी कड़ी में सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष अनामिका धोका, पूर्व महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता सेठिया, तेयुप मंत्री मयूर आच्छा, डॉक्टर आनंद नाहर ने भी अपने विचार रखे। मीटिंग का संचालन अंकिता सेठिया ने किया।

ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का समापन समारोह

जसोल।

सिवांची मालाणी तेरापंथ क्षेत्रीय संस्थान द्वारा आयोजित मुनि सुमति कुमार जी व मुनि जयकुमार जी के आध्यात्मिक निर्देशन में पाँच दिवसीय जोधपुर संभाग स्तरीय ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। समापन समारोह स्थानीय नाकोडा रोड स्थित तेरापंथ सभा भवन जसोल में हुआ।

मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि ७ से १५ तक की उम्र में यदि संस्कारों को अपना लिया जाए तो जीवन के साथ ही भविष्य का सुंदर निर्माण हो सकता है। उन्होंने कहा कि लघु दृष्टांत द्वारा प्रेरणा दी कि हमारे भीतर अनंतज्ञान, दर्शन, शक्ति है। अपेक्षा है उसे जागृत करने की। मुनि जय कुमार जी व मुनि देवारीय कुमार जी ने भी विचार रखे।

कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, तेरापंथ महासभा के जोधपुर संभाग प्रभारी गौतम चंद सालेचा, प्रायोजक अशोक कुमार सिंघवी, मारवाड़ आंचलिक संयोजक सुरेंद्र सालेचा, मोटिवेटर स्पीकर विमल गुनेचा दिल्ली, राजेश खटेड़ चेन्नई, याशिका चेन्नई, अभातेममं संभाग प्रभारी सारिका बागरेचा बालोतरा, मोक्षित बागरेचा सहित वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र व फलसूंड के ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा ने प्रस्तुत किया और शिविर की संपूर्ण जानकारी दी। शिविर में भाग ले रहे बालकों द्वारा नाटिका की प्रस्तुति दी गई। शिविर प्रायोजक सुखराज, बाबूलाल, त्रिभूवनकुमार, अशोक, मृदुलकुमार सिंघवी परिवार असाड़ा-गांधीधाम-जोधपुर का सिवांची मालाणी संस्थान द्वारा बहुमान किया गया। साथ ही तेरापंथ सभा जसोल को भी सम्मानित किया गया।

शिविर संयोजक संपतराज चोपड़ा ने बताया कि शिविर में विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय रहे बालकों को एवं पूरे पाँच दिवसीय शिविर में भाग ले रहे संभागियों को प्रशस्ति-पत्र, मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। साथ ही अतिथि, मोटिवेटर स्पीकर, सभी प्रशिक्षक, शिविर संयोजक संपतराज चोपड़ा व राजेश बाफना सहित इस शिविर में सेवाएँ देने वाले कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। इस शिविर को लेकर स्थानीय जसोल, बालोतरा, पचपदरा के तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं, तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल के सदस्यों ने अपनी सेवाएँ दी। कार्यक्रम का संचालन संस्थान मंत्री ललित श्रीश्रीमाल ने किया।

पवित्र भाव से पवित्र आत्मा के स्मरण से होती है ऊर्जा प्राप्ति

इस्लामपुर।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप, इस्लामपुर द्वारा सुख-शांति, समृद्धि मंत्र अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में बहुत समस्याएँ आती हैं। व्यक्ति प्रयास बहुत करता है, लेकिन सफलता मिलती नहीं है। अंतराय कर्म का उदय होने पर जीवन में अवरोध बहुत आते हैं। ग्रह दोष के कारण से भी समस्याएँ आती हैं। प्राचीन जैन ग्रंथों में बहुत कुछ दिया है, उसका उपयोग करें। प्रत्येक ग्रह के अलग-अलग में प्रयोग मिलते हैं, उनका जप किया जाए। सोते समय नवकार मंत्र एवं अर्हम् का जप एवं सुबह उठने के साथ मंगलभावना स्वयं के प्रति एवं दूसरों के प्रति की जाती है तो शरीर के भीतर शक्ति का संचार होता है। पवित्र भावों से पवित्र आत्मा के स्मरण से ऊर्जा प्राप्त होती है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जीवन में शक्ति का महत्त्व होता है। आत्म-शक्ति-मनोबल को बढ़ाने के लिए ध्यान-मंत्र की साधना आराधना की जाती है। जैन धर्म में विभिन्न प्रकार के मंत्र, श्लोक, स्तोत्र प्रचलित हैं। मंत्र, स्त्रोत के अनेक चमत्कार मिलते हैं। जैन दर्शन में चमत्कार को महत्त्व नहीं दिया। आत्मकल्याण कर्म निर्जरा के लिए साधना करने का विधान है।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप के मंगलाचरण से हुआ। तेयुप मंत्री मुदित पींचा, कन्हैयालाल बोथरा ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन विकास बोथरा ने किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी कुंदनरेखा जी के रोहिणी भवन से ग्रीन पार्क के लिए विहार से पूर्व मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि रोहिणी क्षेत्र तेरापंथ धर्मसंघ के भावक समाज की दृष्टि से बड़ा क्षेत्र है। यहाँ के श्रावकों में श्रद्धा है, समर्पण है, गुरु इंगित अनुसार अपने संघ को विस्तार देने का जज्बा भी है।

इस अवसर पर मैं श्रावकों को कहना चाहती हूँ कि सभी के अंदर सम्यग् दर्शन का दीया अखंड जलता रहे, जिसके प्रतिफल कषाय स्वयमेव उपशांत होने लगेंगे। सोच सकारात्मक बनकर अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगी। राग-द्वेष की प्रवृत्ति निवृत्ति की तरफ प्रयाण करने लगेगी। ऐसा होते ही एक नए सवेरे का अवतरण होगा, व्रतों की चेतना का विकास होगा।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष विजय जैन, कोषाध्यक्ष पराग जैन, राजू देवी राखेचा, निर्मला सुराणा, नीरज जैन, बिरदीचंद जैन, श्यामसुंदर जैन आदि भाई-बहनों ने गीतिका व अपने विचारों द्वारा साध्वीश्री जी के आने वाले प्रवास की मंगलकामना की।

कार्यक्रम में मंगलाचरण सुरेंद्र नाहटा ने किया। संचालन सभा के महामंत्री राजेंद्र सिंघी ने किया।

मुमुक्षु अंकिता का मंगलभावना समारोह

चेन्नई।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में चिंताधरिपेट में महावीर भवन में मुमुक्षु अंकिता का मंगलभावना कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी के द्वारा महांत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण कन्या मंडल ने किया। महिला मंडल चेन्नई ने मंगलभावना गीत की प्रस्तुति दी।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि हमें कलयुग में ऐसे महान जिनशासन की प्राप्ति हुई है। विलक्षण गुरु, विलक्षण संघ एवं विलक्षण विकास करने का सुअवसर हमें मिला है। मुमुक्षु अंकिता जो राग से विराग की ओर, असंयम से संयम की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर जा रही है। हमारी मंगलकामना है कि जिस श्रद्धा के साथ तुमने इस मार्ग पर बढ़ने का लक्ष्य बनाया है उसी श्रद्धा से आगे बढ़ते जाना।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। मुमुक्षु कोमल ने मुमुक्षु अंकिता के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। चेन्नई सभाध्यक्ष उगमराज सांड, महिला मंडल एवं कन्या मंडल की कन्याओं ने अपनी प्रस्तुति दी। मुमुक्षु अंकिता ने जनता से आह्वान किया कि दीक्षा में उपलक्ष्य वाक् हिंसा से बचने का प्रयास करें एवं प्रत्याख्यान कर अपना नाम अंकित करवाएँ।

इस दौरान तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग सदस्य प्यारेलाल पितलिया, गौतम सेठिया, सभा उपाध्यक्ष विजयसिंह सेठिया, सहमंत्री देवीलाल हिरण, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, मंत्री रीमा सिंघवी आदि की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री अशोक खतंग ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री मनोज गादिया ने किया।

तत्त्व बोध कार्यशाला का आयोजन

ईरोड।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि मिथ्यात्व का वमन, इंद्रियों का शमन व आत्मा में रमण के लिए तत्त्वज्ञान की आवश्यकता है। दृष्टिकोण में परिवर्तन आ जाता है। जो तत्त्व को जान सकता है। वह पुण्य और पाप को भी जान सकता है। वही जीव और अजीव की भेदरेखा कर सकता है। वह असंयम से संयम की ओर बढ़ सकता है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि महिला मंडल का यह आयाम काफी प्रगति पर है। भविष्य में इस नई योजना से बहनों में नई चेतना जाग्रत हो सकती है।

साध्वी मेरुप्रज्ञा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने तत्त्व ज्ञान की प्रेरणा देते हुए गीतिका प्रस्तुत की। अध्यक्षा सुनीता भंडारी ने स्वागत भाषण, रेणु नखत, पिंकी वैदमूथा, पूजा बोथरा, पूनम दुगड़ आदि द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम किया गया। मंजु बोथरा ने आभार ज्ञापन किया।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

राजाजीनगर।

बैंगलोर निवासी नरेंद्र कुमार सुराणा के सुपुत्र प्रदीप कुमार सुराणा एवं वधू पक्ष सोजत सिटी निवासी कमल कुमार दुगड़ की सुपुत्री भावना दुगड़ का विवाह पारिवारिकजनों की उपस्थिति में गणेश बाग में संपन्न करवाया गया।

परिषद् परिवार द्वारा प्रमाण पत्र एवं मंगलभावना यंत्र को वर-वधू पक्ष को प्रदान किया गया। जैन संस्कार विधि के संयोजक सुनील सिंघवी की उपस्थिति रही।

गंगाशहर।

जतनलाल-नीलम बोथरा की पुत्री तमन्ना व अरिहंत पुत्र प्रवीण-सुनीता पुगलिया की सगाई जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विपिन बोथरा और देवेंद्र डागा ने संपन्न करवाई।

मंगलभावना यंत्र गंगाशहर परिषद् की ओर से भेंट दिया गया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

रायपुर प्रवासी, गंगाशहर निवासी संतोष-स्नेहा बोथरा के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, पवन छाजेड़, विनीत बोथरा और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

साउथ हावड़ा।

सादलपुर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी सुरेश-रनजु धीया ने नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन कुमार बैंगानी एवं सुनीत नाहटा ने जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया।

पारिवारिकजनों की तरफ से सुरेश धीया ने आए हुए अतिथियों के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार

साउथ कोलकाता।

सुजानगढ़ निवासी, कोलकाता प्रवासी पीयूष-श्रेया नाहटा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक एवं उपासक महाबीर प्रताप दुगड़, संस्कारक एवं परिषद् के सहमंत्री राकेश नाहटा ने संपूर्ण विधि एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

शिशु के नाना प्रेमचंद्र पारख एवं दादा सुरेंद्र नाहटा ने संस्कारकों एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

मेघराज-खुशबू सेठिया के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विपिन बोथरा और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। तेयुप सहमंत्री ऋषभ लालाणी सहयोगी के रूप में जुड़े।

मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

गंगाशहर।

सुधीर-पूजा लुणावत के नूतन प्रतिष्ठान प्रारंभ का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक भरत गोलछा व विनीत बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप साथी चैतन्य रांका सहयोगी के रूप में उपस्थित थे। संस्कारक भरत गोलछा ने लुणावत परिवार को बधाई प्रेषित की।

✦ *दूसरे के दुःख को अपना मानकर चलने वाला व्यक्ति महानता के पथ पर गति कर सकता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

ध्यान के आलंबन असंख्य हो सकते हैं किंतु ध्यान की लंबी परंपरा में साधक वर्ग ने कुछ विशेष अनुभव प्राप्त किए हैं। उनके आधार पर ध्यान के आलंबनों का वर्गीकरण किया गया है। वह वर्गीकरण ध्यान के प्रकारों का निमित्त बना है।

स्थूल व्यवहार की भाषा में एकाग्रता को हम एक कोटि में रख देते हैं, किंतु सूक्ष्म दृष्टि से उसकी असंख्य कोटियाँ हैं। एक व्यक्ति एक क्षण में जितना एकाग्र होता है, दूसरे क्षण में उससे अधिक यह कम एकाग्र भी हो सकता है। एक आदमी जितना एकाग्र होता है, दूसरा उससे कम या अधिक भी हो सकता है। इस प्रकार काल-क्रम और व्यक्ति-भेद की दृष्टि से एकाग्रता की असंख्य कोटियाँ हो जाती हैं। इनके आधार पर एकाग्रतात्मक ध्यान के असंख्य प्रकार हो जाते हैं। किंतु इस सूक्ष्म पद्धति के आधार पर ध्यान की कोटियाँ निश्चित नहीं की गई हैं। उसकी चार कोटियाँ हैं और वे आलंबन के वर्गीकरण के आधार पर निर्धारित की गई हैं। आलंबन चार रूपों में वर्गीकृत है–(१) पिंड (शरीर), (२) रूप (आकार), (३) पद (शब्द), (४) रूपातीत (निराकार)।

इनके आधार पर एकाग्रतात्मक ध्यान के चार प्रकार बन जाते हैं–

(१) पिंडस्थ–पिंड के आलंबन से होने वाली एकाग्रता।

(२) पदस्थ–पद के आलंबन से होने वाली एकाग्रता।

(३) रूपस्थ–रूप के आलंबन से होने वाली एकाग्रता।

(४) रूपातीत–अरूप के आलंबन से होने वाली एकाग्रता।

पिंडस्थ ध्यान

पिंडस्थ ध्यान में शरीर का आलंबन लिया जाता है। आत्मा और शरीर में एकत्व नहीं है, किंतु उनका संयोग है। आत्मा चेतन है और शरीर अचेतन। अतः आत्मा और शरीर स्वरूप की दृष्टि से भिन्न हैं। शरीर आत्मा की अभिव्यक्ति और प्रवृत्ति में सहयोग करता है, इसलिए उसमें सर्वथा भेद भी नहीं है। इस दृष्टि से सशरीर आत्मा न केवल चेतन और न केवल अचेतन है, किंतु जात्यान्तर है–चेतन और अचेतन का संयोग है। प्राणशक्ति, भाषा, इंद्रिय और चिंतन–ये न चेतन के लक्षण हैं और न अचेतन के लक्षण हैं किंतु चेतन और अचेतन की समन्वित अवस्था के लक्षण हैं। आत्मा की ज्ञानात्मक शक्ति और शरीर का पौद्गलिक सहयोग, ये दोनों मिलकर सशरीर आत्मा के अस्तित्व को प्रकट करते हैं।

शरीर के पाँच प्रकार हैं–

औदारिक–यह अस्थि-मांसमय स्थूल शरीर है।

वैक्रिय–यह अस्थि-मांसरहित स्थूल शरीर है। यह योगी के भी हो सकता है।

आहारक–यह योगज शरीर है। इसे एक स्थान से दूसरे स्थान में प्रेषित किया जा सकता है।

तैजस–यह विद्युत् शरीर है।

कार्मण–यह मूल शरीर या संस्कार शरीर है।

तेजस और कार्मणा दोनों सूक्ष्म शरीर हैं।

चैतन्य का विस्तार बाह्यजगत की ओर होता है, तब उसकी गति सूक्ष्म से स्थूल की ओर होती है और जब वह बाह्यजगत से अंतर्जगत में लौटता है तब उसकी गति स्थूल से सूक्ष्म की ओर होती है।

स्थूल शरीर की निष्पत्ति कार्मण शरीर के होने पर होती है, इस दृष्टि से वह सब शरीरों का मूल कारण है। स्थूल शरीर भवान्तरगामी नहीं होते। सूक्ष्म शरीर भवान्तरगामी होते हैं। उनमें भी भवान्तरगमन के संस्कार कार्मण शरीर में संचित रहते हैं। इस दृष्टि से यह संस्कार शरीर भी है।

आत्मा का सबसे निकट संपर्क कार्मण शरीर से है। आत्मा के चैतन्य और वीर्य सर्वप्रथम इसी में संक्रांत होते हैं। तैजस शरीर उन्हें स्थूल शरीर तक पहुँचाता है और स्थूल शरीर के द्वारा वे अभिव्यक्त होते हैं। इस प्रकार आत्मा के चैतन्य और वीर्य कार्मण शरीर, तैजस शरीर और स्थूल शरीर की क्रमिक प्रक्रिया से बाह्यजगत तक पहुँचते हैं और वे विपरीत प्रक्रिया से बाह्यजगत के प्रभाव को आत्मा तक पहुँचाते हैं और वे विपरीत प्रक्रिया से बाह्यजगत के प्रभाव को आत्मा तक पहुँचाते हैं। बाह्यजगत का प्रभाव सर्वप्रथम स्थूल शरीर पर होता है। उसे तैजस शरीर कार्मण शरीर तक ले जाता है और कार्मण शरीर के माध्यम से वह आत्मा तक पहुँचता है। इस प्रकार तैजस शरीर प्रेषण के माध्यम से काम करता है। योग के आचार्यों ने तेजोमय आत्मा की परिकल्पना की है। आत्मा की तेजोमयता की परिकल्पना का निमित्त यह तैजस शरीर ही है।

कार्मण और तैजस शरीर सूक्ष्म शरीर हैं, इसलिए इनके अवयव नहीं हैं। वे अवयव-विहीन शरीर हैं। वे स्थूल शरीर के अवयवों में परिव्याप्त हैं। साधारणतया वे समूचे शरीर में परिव्याप्त हैं किंतु शरीर के कुछ भागों में वे विशेष रूप से केंद्रित हैं। ये केंद्रित भाग चैतन्य की अभिव्यक्ति के मुख्य केंद्र हैं। पिंडस्थ ध्यान में इन्हीं केंद्रों पर मन को एकाग्र किया जाता है। चैतन्य की अभिव्यक्ति के शारीरिक केंद्र ये हैं–सिर, भ्रू, तालु, ललाट, मुँह, नेत्र, कान, नासाग्र, हृदय, नाभि–इन केंद्रों पर ध्यान करने से मन की एकाग्रता सरलता से सधती है और आंतरिक ज्ञान विकसित होता है।

पिंडस्थ ध्यान में चक्रों का आलंबन भी लिया जाता है।

चक्र

'संसारिणां वीर्यं निमित्तापेक्षं–संसारी जीव की समस्त शक्तियों का उपयोग निमित्त के योग से ही होता है। जीव में चैतन्य है, किंतु उसका उपयोग इंद्रियगोलकों और ज्ञानवाहक स्नायु-गुच्छकों के माध्यम से होता है। जीव में वीर्य है किंतु उसका उपयोग कर्मेन्द्रियों व क्रिया-तंतुओं के माध्यम से होता है। उन्हीं सुषम्नागत ज्ञानवाही गुच्छकों को चक्र कहा गया है। वे ज्ञान की अभिव्यंजना के निमित्त हैं, इसलिए उन पर मन को एकाग्र करने से उनमें प्राणधारा प्रवाहित होती है। ज्ञान के सहायक तंतु सक्रिय हो जाते हैं।

चक्रों के नाम, स्थान आदि अगले पृष्ठ पर देखिए–

वासना-क्षय की दृष्टि से स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान करने का बहुत महत्त्व है।

मणिपुर चक्र पर ध्यान करने से शारीरिक आरोग्य बढ़ता है किंतु उससे कामशक्ति प्रबल होती है, इसलिए ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक है कि वह मणिपुर चक्र पर ध्यान करने के पश्चात् प्राणधारा को हृदय चक्र में प्रवाहित कर विशुद्धि चक्र तक ले जाए। उसमें उस कामशक्ति का शोधन हो जाता है।

आज्ञा चक्र या भृकुटि चक्र का बहुत महत्त्व है क्योंकि इस स्थान में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना–तीनों का संगम होता है। इसके जागरण से अन्य चक्रों का जागरण सहज हो जाता है और इसका जागरण अन्य चक्रों की अपेक्षा अधिक कठिन और अधिक अभ्यास-सापेक्ष है।

मूलाधार चक्र से ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाया जाता है। उसके ऊर्ध्वगामी होने से मनुष्य की वृत्ति आंतरिक हो जाती है। ऊर्जा के ऊर्ध्वीकरण का यह आदि बिंदु है। इसलिए साधना में इसका बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

अनाहत चक्र प्राणवायु का स्थल और ओजस का मुख्य केंद्र है–

तत्परस्यौजसः स्थानं तत्र चैतन्यसंग्रहः

– चरक, सूत्रस्थान ३०/७

विकल्प-शून्यता की प्राप्ति के लिए हृदय-चक्र पर ध्यान देना और उसकी गहराई में उतरना बहुत ही उपयोगी है। हृदय-चक्र पर ध्यान करने से ग्रंथि-भेद हो जाता है। उससे आत्म-साक्षात्कार सुलभ हो जाता है।

चक्रों पर ध्यान करने से ज्ञानतंतु जागृत होते हैं, किंतु उन्हें जागृत करने का एकमात्र यही उपाय नहीं है। संयम की प्रखर साधना और प्रबल वैराग्य हो तो चक्रों पर ध्यान किए बिना ही वे जागृत हो जाते हैं।

प्रेक्षा का अर्थ है–प्रकृष्ट या गहरे में उतरकर देखना। हम बाहर की ओर देखते ही हैं। हमारी इंद्रियाँ और मन, इन सबकी गति बहिर्मुखी है। प्रेक्षा इसका विपरीत क्रम है। इसके द्वारा इंद्रियाँ और मन अंतर्मुखी बनते हैं। हमारे शरीर में रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं। उसके कई हेतु हैं, जैसे–सर्दी, गर्मी आदि बाहरी वातावरण, भोजन, वर्तमान चित्तपर्याय और कर्म का उदय। जब हम प्रयत्नपूर्वक कर्म का शीघ्र विपाक कर उसे उदय में लाते हैं तब और अधिक रासायनिक परिवर्तन होता है। इस रासायनिक परिवर्तन को प्रेक्षा के द्वारा देखा जा सकता है।

प्रेक्षा करते-करते मन सूक्ष्म और संवेदनशील हो जाता है और समूचे शरीर के ज्ञान तंतु जागृत हो जाते हैं। इसलिए शरीर में होने वाले रासायनिक परिवर्तनों को सहज ही जाना जा सकता है।

प्रेक्षा के विशेष प्रयोग

मन को सिर से पाँव तक ले जाना, शरीर के प्रत्येक अवयव में चेतना को प्रवाहित करना और साथ-साथ वेदना को देखना और उसके प्रति तटस्थ रहना प्रेक्षा का पहला चरण है। इसके बाद अर्धचेतन और अवचेतन मन के स्तर पर होने वाली प्रतिक्रियाओं और कर्म विपाकों को देखना, यह प्रेक्षा का अग्रिम चरण है। देखना और तटस्थ रहना ये दोनों मिलकर प्रज्ञा को जागृत करते हैं। उसके जागृत होने पर मोह-चक्र टूट जाता है।

सिर से पाँव तक और पाँव से सिर तक प्रत्येक अवयव को देखने का अभ्यास पुष्ट हो जाए और दर्शन के साथ-साथ चैतन्य का कण-कण झंकृत हो जाए तब एक साथ कई अवयवों पर मन को ले जाना चाहिए। इसका अभ्यास पुष्ट होने पर समूचे शरीर पर एक साथ मन को ले जाना चाहिए। इस अभ्यास से मन पर नियंत्रण स्थापित हो जाता है। फिर हम उसे जहाँ ले जाना चाहें वहाँ वह चला जाता है और जहाँ स्थिर करना चाहें वहाँ वह स्थिर हो जाता है।

प्रेक्षा में विशेष ध्यान देने योग्य यह है कि अप्रमाद निरंतर बना रहे। प्रिय संवेदन के प्रति राग और अप्रिय संवेदन के प्रति द्वेष न जागे। एकाग्रता का अभ्यास परिपक्व हो, वह प्रेक्षा का उद्देश्य नहीं है। पर वह इसका सशक्त साधन है। वह इससे सधती है। पहले से सधी हुई हो तो प्रेक्षाकाल में वह बहुत उपयोगी बन जाती है।

चित्त को किसी निश्चित देश में स्थिर करना धारण है। वह शरीर या उससे भिन्न अन्य वस्तुओं पर की जा सकती है। देहाश्रित धारणाएँ पिंडस्थ ध्यान की कोटि में समाविष्ट होती हैं। धारणा के चार प्रकार हैं–पार्थिवी, आग्नेयी, मारुती, वारुणी।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१२) सत्यधीरात्मलीनोऽसौ, सत्यान्वेषणतत्परः।
स्थूलसत्यं समुत्सार्य, सूक्ष्मं तदवगाहते।।

उसकी बुद्धि सत्य में नियोजित हो जाती है। वह आत्मलीन और सत्य के अन्वेषण में तत्पर होता है। वह स्थूल सत्य को छोड़कर सूक्ष्म सत्य का अवगाहन करता है।

(१३) माता पिता स्नुषा भ्राता, भार्या पुत्रास्तथौरसाः।
त्राणाय मम नालं ते, लुप्यमानस्य कर्मणा।।

सूक्ष्म सत्य का अवगाहन करने वाला इस सच्चाई को पा लेता है कि अपने कर्मों से पीड़ित होने पर मेरी सुरक्षा के लिए माता-पिता, पुत्रवधू, भाई, पत्नी और औरस पुत्र-कोई समर्थ नहीं हैं।

जैसे-जैसे साधक सत्य की खोज में आगे बढ़ता है, अस्तित्व के निकट पहुँचता है, वैसे-वैसे उसकी स्थूल सत्य की कल्पनाएँ गिरने लगती हैं। अब तक का जो माना हुआ कल्पित आकार था वह नष्ट होने लगता है। वह देखता है—मैं अपने को क्या समझता था? और क्या हूँ? यह नाम-रूप मैं हूँ? दृश्य को 'स्व' समझ रहा था। और 'पर' में आत्म-बुद्धि मान रहा था। मैं और मेरे का संबंध स्थापित किया। संयोग में शाश्वत की बुद्धि थी। अब कोई मेरा प्रतीत नहीं होता। सब अज्ञान था और सब अज्ञान में हैं। संबंधों का जाल खड़ा कर उलझ रहे हैं। मेरा मेरे अतिरिक्त कोई त्राण नहीं है। बुद्ध ने ठीक कहा है—'अपने दीपक स्वयं बनो, स्वयं ही स्वयं की शरण हो?

स्व-दर्शन में झूठी मान्यता टिक नहीं सकती। प्रकाश के सामने अंधकार का अस्तित्व कब टिका है? सत्य प्रकाश है, ज्योति है, उस ज्योति के समक्ष मिथ्या धारणाएँ कैसे खड़ी रह सकती हैं? बुद्ध को ज्ञान हुआ तब अपने मन से कहा—'मेरे मन! अब तुझे विदा देता हूँ। अब तक तेरी जरूरत थी शरीर रूपी घर बनाने थे। अब मुझे परम निवास मिल गया।'

'कोई अपना नहीं है'—इसे खाली दोहराओ मत। सचाई का दर्शन करो। **'नालं मम ताणाए'** मेरे लिए धन, पद, यश, प्रतिष्ठा, परिवार, स्वजन आदि कोई त्राण नहीं है और न मैं भी उनका त्राण हूँ। जिस व्यक्ति की यह घोषणा है वह प्रत्यक्ष-द्रष्टा है। उसने अंतर में प्रवेश कर निरीक्षण किया है। हम भी इसके साथ गहराई में उतरें और सच्चाई का अनुभव करें।

(१४) अध्यात्म सर्वतः सर्वं, दृष्ट्वा जीवान् प्रियायुषः।
न हन्ति प्राणिनः प्राणान्, भयादुपरतः क्वचित्।।

सभी जीव सब तरह से समान आत्मानुभूति रखते हैं। उन्हें जीवन प्रिय है, यह देखकर प्राणियों के प्राणों का वध न करे, भय और वैर से निवृत्त बने—अभय बने।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न १३ : घातिक का अर्थ क्या है?

उत्तर : घात खत्म करने वाले को कहा जाता है। यहाँ कर्म का संदर्भ है, अतः आत्म गुणों की घात करने वाले कर्म हैं। कर्मों के दो वर्ग हैं—(१) आत्म गुणों के घाती, (२) आत्म गुणों के अघाती।
आत्म गुणों के अघाती कर्म केवल भोगे जाते हैं, उनका आत्म गुणों के साथ सीधा संबंध नहीं है।

प्रश्न १४ : आठ कर्मों में बंधकारक कर्म कितने हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म से अशुभ व नाम कर्म से शुभ कर्म का बंध होता है। शेष छह कर्मों से शुभ-अशुभ दोनों का बंध नहीं होता।

प्रश्न १५ : कितने कर्मों का कौन से गुणस्थान में बंध होता है?

उत्तर : एक कर्म (सात वेदनीय) का बंध—ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवें गुणस्थान में। छह कर्मों (मोहनीय व आयुष्य को छोड़कर) का बंध—केवल दसवें गुणस्थान में। सात कर्मों (आयुष्य को छोड़कर) का बंध—तीसरे, आठवें व नौवें गुणस्थान में।
सात-आठ कर्मों का बंध—पहले, दूसरे तथा चौथे से सातवें गुणस्थान में।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

श्रावक श्री रूपचंदजी सेठिया

वे एक तत्त्वज्ञानी और विद्या-प्रेमी व्यक्ति थे। थोकड़ों के माध्यम से उन्होंने जैन तत्त्वज्ञान को हृदयंगम किया था। उन्हें अनेक स्तवन तथा तात्त्विक ढालें कंठस्थ थीं। सामायिक करते समय वे उसकी परिवर्तना करते रहते थे। तत्त्वज्ञान के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की विद्याओं के प्रति भी उनके मन में अगाध अनुराग था। उसी के फलस्वरूप लगभग पैंतालीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने संस्कृत भाषा का अध्ययन प्रारंभ किया। उन्हीं दिनों में उन्होंने प्राचीन जैन लिपि का भी परिश्रम पूर्वक अभ्यास किया। उससे जहाँ उन्हें प्राचीन ग्रंथों को पढ़ने की क्षमता प्राप्त हुई वहाँ ज्ञान-क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक नया साधन भी उपलब्ध हुआ। कालांतर में वे अपना लिखने का सारा कार्य उसी लिपि में करने लगे।

वे अपने हर व्यवहार में सत्यता का पालन किया करते थे। किसी भी विषय में उनका स्वीकार अथवा इन्कार व्यवहार मात्र न होकर वास्तविक होता था। वे एक धनिक व्यक्ति थे। आवश्यकता होने पर अन्य व्यक्ति उनके यहाँ से विभिन्न वस्तुएँ माँगकर ले जाया करते थे। बहली, घोड़ी, बर्तन, आभूषण आदि जिस वस्तु की स्वीकृति वे दे देते फिर चाहे उन्हें स्वयं उसकी आवश्यकता क्यों न हो जाए, वे उसे रोकते नहीं। अपनी पूर्ति वे वस्तु वापस आने पर करते या फिर अन्य किसी से माँगकर करते।

जिस वस्तु को वे देना नहीं चाहते, उसके लिए इन्कार करने का कोई बहाना नहीं खोजते, किंतु सीधा इन्कार ही कर देते। माँगने वाला व्यक्ति चाहे साधारण गृहस्थ होता या उच्च राज्याधिकारी, वे किसी का भय नहीं खाते।

एक बार सुजानगढ़ में एक नए नाजम की नियुक्ति हुई। वे वहाँ पहले-पहल ही आए थे। लोगों से उनको पता लगा कि कोई आवश्यकता की वस्तु हो तो सेठिया-परिवार से मँगाई जा सकती है। उन्होंने अपना आदमी वहाँ भेजा और कुछ वस्तुएँ मँगाई। रूपचंदजी ने अन्य वस्तुएँ देते हुए एक वस्तु के लिए कहा कि यह वस्तु मेरे पास है तो सही पर देने की इच्छा नहीं है। नौकर ने जब यह बात नाजम साहब को बतलाई तो उस विचित्र उत्तर से बड़े विस्मित हुए। उन्होंने लोगों से पूछा—'यह ऐसा कैसा आदमी है?' लोगों ने उनको बतलाया कि वे कभी बहाना नहीं करते। जो वस्तु किसी कारण से वे नहीं देना चाहते तो स्पष्ट ही इन्कार कर देते हैं।

नाजम साहब को उनकी उस विचित्र प्रकृति पर क्रोध तो अवश्य आया परंतु लोगों के मुख से उनकी सत्यता का परिचय पाकर वह शांत हो गया।

मुनीम और दो गज कपड़ा

व्यापार में वे पूरी प्रामाणिकता बरतते थे। उनकी दुकान पर किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी या मायाचार नहीं होता था। उस विषय में उन्होंने अपने सभी मुनीम-गुमाश्तों को सावधान कर रखा था। वे कहा करते थे कि बिना हक का पैसा 'जमाल गोटे का जुलाब' होता है, वह कभी टिक नहीं सकता। लेन-देन में भूल से किसी को कम दे दिया जाता तो अपने जमादार को भेजकर जितनी रकम बाकी रहती उसे व्यापारी के घर भेज दिया करते थे।

एक बार एक व्यक्ति उनकी दुकान पर कपड़ा खरीदने आया तो मुनीम ने उसको कपड़ा फाड़कर दे दिया और दाम ले लिए। जिस भाव से कपड़ा दिया गया था वह भाव दुकान के अनुकूल नहीं पड़ता था। रूपचंदजी ने जब मुनीम को यह पूछा तो उसने बतलाया कि काफी देर तक समझाने पर भी जब वह ठीक भाव में लेने के लिए तैयार नहीं हुआ तो मैंने उसी के कहे हुए भाव पर कपड़ा फाड़ दिया किंतु फाड़ने में लगभग दो गज कपड़ा बचा लिया अतः पड़ता बैठ जाएगी।

(क्रमशः)

✦ *श्रम करो, पर निष्पत्तिपरक श्रम करो। लक्ष्यहीन व अल्पफलप्रद श्रम से क्या लाभ?*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह का आयोजन

हिरियुर, कर्नाटक।

स्थानीय तेरापंथ भवन में समणी डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जसोल निवासी बेलगाम प्रवासी महेंद्र चोपड़ा व स्व० संतोष देवी, उपासिका कविता देवी चोपड़ा की सुपुत्री मुमुक्षु आयुषी चोपड़ा का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसंघ है।

समण श्रेणी का मुख्य उद्देश्य साधना, शिक्षा व विदेशों में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार है। अमेरिका में ४ व लंदन में १ समण श्रेणी के स्थायी केंद्र हैं। पर्युषण के दौरान भी अनेक यात्राएँ होती रहती हैं। तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना में समण श्रेणी वरदान सिद्ध हुई है। समणीजी ने कहा कि जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने वाला, गति-प्रगति करता हुआ सफलता के शीर्ष तक पहुँच जाता है। इसलिए व्यक्ति को लक्ष्य को छोटा नहीं रखना चाहिए।

मुमुक्षु आयुषी ने संयम मार्ग ग्रहण कर अपने जीवन एवं आत्मा का कल्याण करने का लक्ष्य बनाया है जो कि मानव के लिए श्रेष्ठ कार्य है। पाँच महाव्रतों का पालन करना अति कठिन कार्य है और मुमुक्षु आयुषी ने उसी राह को चुना है जिसके लिए यह साधुवाद की पात्र है।

नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सभाध्यक्ष दीपचंद चोपड़ा ने मुमुक्षु अभिनंदन पत्र का वाचन किया व मंगलभावना व्यक्त की। मुमुक्षु आयुषी चोपड़ा ने अपने वक्तव्य में प्रसंग के माध्यम से कैसे वैराग्य की भावना जागृत हुई बताया।

मुमुक्षु आयुषी ने एक सामूहिक भेंट का आह्वान किया। उत्तर कर्नाटक तेरापंथ सेवा समिति के अध्यक्ष जयंतीलाल चोपड़ा, महेंद्र चोपड़ा, महिला मंडल, हिरियुर, चोपड़ा परिवार, देवराज चोपड़ा, लक्ष्मी लुंकड़ आदि ने वक्तव्य, संवाद, गीत आदि के माध्यम से मुमुक्षु के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। सभा की ओर से मुमुक्षु बहन का अभिनंदन पत्र के द्वारा अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन समणी डॉ० मानसप्रज्ञा जी ने किया। कार्यक्रम से पूर्व मुमुक्षु बहन आयुषी की भव्य शोभायात्रा हिरियुर शहर के प्रमुख रास्तों में निकाली गई। स्थानीय श्रावक समाज ने मुमुक्षु के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

साध्वीवृंद का नगर प्रवेश

गुवाहाटी।

साध्वी स्वर्णरेखा जी उनकी सहयोगिनी साध्वीवृंद स्वस्तिकाश्री जी, साध्वी सुधांशुप्रभा जी एवं साध्वी गौतमयशा जी के भव्य नगर प्रवेश पर आयोजित स्वागत समारोह में साध्वी स्वर्णरेखा जी ने कहा कि संतों का आगमन आह्लादकारी होता है। जहाँ संतों के चरण पड़ते हैं, वह धरती धन्य हो जाती है। वैसे तो यह धरती आचार्यश्री महाश्रमण के चरण स्पर्श से धन्य हो चुकी है, फिर भी संतों के पुनरागमन से पुण्य की क्रियाएँ संपादित होती रहती हैं।

शांतिपुर के शिवशक्ति अपार्टमेंट स्थित सुबोध बिनोद बोरड़ के आवासीय परिसर में आयोजित स्वागत समारोह का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात मधुर स्वागत गीतिका का संगान तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने किया। इसी क्रम में तेयुप के अध्यक्ष मनीष कुमार सिंघी, महिला मंडल की मंत्री सुशीला मालू, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष संतोष पुगलिया, रास्ते की सेवा के सहयोगी रवि बुच्चा ने वक्तव्य एवं तेरापंथ किशोर मंडल एवं बोरड़ परिवार की बहनों ने गीतिका के माध्यम से साध्वीवृंद का स्वागत-अभिनंदन किया।

साध्वी के रास्ते की सेवा के संयोजक एवं सभा के कार्यकारिणी सदस्य निलेश पगारिया ने बताया कि इस अवसर पर समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्शप्रज्ञा जी तथा साध्वी स्वस्तिकाश्री जी एवं सुधांशुप्रभा जी ने वक्तव्य, परिचर्चा एवं गीतिका के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर साध्वीवृंद का भावभीना स्वागत करते हुए तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के मंत्री रायचंद पटावरी ने कहा कि साध्वीवृंद के शुभागमन पर संपूर्ण गुवाहाटी समाज हर्षित है।

इससे पूर्व अमीनगाँव स्थित बिमल दुगड़ के उपहार टी परिसर से विहार करते हुए साध्वीवृंद कामाख्या गेट स्थित जेठमल सेठिया के परिसर में पधारे। मंच संचालन सभा के कार्यकर्ता निलेश पगारिया ने किया।

संस्कार जीवन का सुरक्षा कवच

कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में जेम्स एकेडमिया इंटरनेशनल स्कूल में पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर की संपन्नता पर समापन समारोह का आयोजन बेहाला तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, महामंत्री विनोद बैद, कोषाध्यक्ष मदन मरोठी, पूर्व मुख्य न्यासी भंवरलाल बैद, आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा, कार्यकारिणी सदस्य शिखरचंद लुणावत, राजेश दुगड़, शैलेंद्र बोरड़ व जेम्स एकेडमिया इंटरनेशनल स्कूल के सीईओ प्रकाश भूतोड़िया, अरुण भूतोड़िया, कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली जीतो चेप्टर कोलकाता के अध्यक्ष भावन कामदार आदि महानगर की विभिन्न सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भौतिक व वैज्ञानिक युग में संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण के लिए शिविर की उपयोगिता निर्विवाद है। शिविर जीवन निर्माण की पाठशाला है।

मुनिश्री ने संस्कार निर्माण के इस कार्य में योगदान देने वाले सभी संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं के श्रम मूल्यवान बताते हुए उनकी प्रशंसा की। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि महासभा देश में बालकों एवं बालिकाओं के शिविरों के माध्यम से संस्कार निर्माण का कार्य कर रही है। शिक्षा के साथ संस्कारों का आधार विकास का माध्यम बनता है।

स्वागत भाषण बेहाला सभा के अध्यक्ष जयसिंह धारीवाल ने दिया। शिविर में सेवा देने वाले कार्यकर्ताताओं एवं बालकों को भी सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री अशोक बैंगानी ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी, ललित बैंगानी ने किया।

अणुव्रत यात्रा

कॉस पाड हिल्स (इ़हानू)

अणुव्रत यात्रा नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति के अंतर्गत अणुविभा परिवार मुंबई के कार्यकर्ता, कॉस पाड़ हिल्स (इ़हानू) में आदिवासी ग्रामवासियों को उनकी ही भाषा में अभातेयुप जेटीएन में विकास धाकड़, अणुव्रत परिवार में राकेश बोहरा, शांतिलाल बाफना आदि ने मराठी भाषा में बड़ी ही सरल एवं सुव्यवस्थित शब्दों में समझाया, जिसे उपस्थित ग्रामवासियों ने बड़ी ही उत्सुकता से नशे के ऊपर डॉक्यूमेंटरी मूवी को देखा एवं जीवन भर नशा मुक्त रहने का संकल्प ग्रहण किया एवं सभी ने कहा ऐसे महापुरुष के हम दर्शन करके अपने आपको शौभाग्यशाली समझेंगे।

आचार्यश्री तुलसी के नाम भक्ति संध्या का आयोजन

ठाणे (मुंबई)।

अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा आयोजित आचार्यश्री तुलसी की २६वीं पुण्यतिथि पर एक शाम आचार्यश्री तुलसी के नाम भक्ति संध्या का आयोजन माजीवाड़ा तेरापंथ भवन में किया गया।

मधुर गायक नीलेश बाफना द्वारा एक से बढ़कर एक भावपूर्ण सुंदर प्रस्तुति देते हुए सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र द्वारा हुई। अणुव्रत गीत का संगान ठाणे सभा टीम द्वारा किया गया। आचार सहिता का वाचन महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका ने करवाया।

स्वागत भाषण अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी एवं ठाणे सभाध्यक्ष रमेश सोनी ने किया। साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी मधुस्मिता जी ने उपस्थित जनमेदिनी को प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया।

साध्वी वर्धमानश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर पूज्यप्रवर के मुंबई चातुर्मास के अवसर पर अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा वेलकम सोंग का लॉन्च किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक मनोहर कच्छारा परिवार का सम्मान किया गया। कन्या मंडल ठाणे प्रस्तुति दी गई। जिसका अणुव्रत टीम द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन वनीता बाफना ने किया।

अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, अणुविभा सहमंत्री मनोज सिंघवी, मुंबई उपाध्यक्ष विजय संचेती, रोशन मेहता, मुंबई सभा पूर्वाध्यक्ष, नरेंद्र तांतेड़, अणुव्रत समिति, मुंबई पूर्वाध्यक्ष गणपत डागलिया, रमेश चोधरी, महाप्रज्ञ ट्रस्ट ठाणे अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल मंत्री देवीलाल श्रीश्रीमाल, सभा मंत्री नरेश बाफना चेतना कोठारी, निर्मला चंडालिया की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुव्रत परिवार राजू बाफना, सुभाष हिंगड़, अविनाश गोगड़, कमलेश नोलखा आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

नियमित योगा व सामायिक का क्रम प्रारंभ

सरदारपुरा।

अभातेयुप की शाखा तेयुप, सरदारपुरा द्वारा 'फिट युवा-हिट युवा' के अंतर्गत सामूहिक योग का आयोजन किया गया। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत पाल रोड स्थित अशोक उद्यान में युवाओं की तंदुरूस्ती के लिए विभिन्न व्यायाम कराए गए। इस अवसर पर लगभग १५ युवाओं सहित ३५ से अधिक लोगों की उपस्थिति रही।

नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष कैलाश जैन ने बताया कि योग कार्यक्रम के पश्चात सभी युवकों ने तेरापंथ भवन अमरनगर में साध्वी कुंदनप्रभा जी आदि के सान्निध्य में सामायिक का प्रयोग किया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने युवकों को ध्यान का महत्त्व बताया और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। साध्वीश्री द्वारा पीढ़ी की धर्म और अध्यात्म से संबंधित जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

नव नियुक्त मंत्री मिलन बांठिया ने बताया कि तेयुप द्वारा प्रत्येक रविवार को योग व सामायिक का आयोजन किया जाएगा, जिसमें युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु योगा, ध्यान, स्वाध्याय व तत्त्व जिज्ञासा का क्रम चल सकेगा।

साध्वीवृंद का मंगल प्रवास

रायबरेली।

साध्वी संगीतश्री जी, साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी एवं साध्वी मुदिताश्री जी ने अपना आठ दिवसीय रायबरेली प्रवास संपन्न किया। लगभग ११ वर्षों के अंतराल के बाद किसी साध्वीवृंद का यहाँ पर आगमन हुआ। बड़ी संख्या में श्रावक सेवा का लाभ लेते हुए इस दुर्लभ क्षण के साक्षी बने।

श्रावक समाज ने साध्वीवृंद के पदार्पण का करुणानिधान पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकंपा बताते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उत्तर प्रदेश में वाराणसी, मिर्जापुर, प्रयागराज, रायबरेली में सफल प्रवास संपन्न करके साध्वीवृंद २०२३ के अपने चातुर्मास क्षेत्र कानपुर की ओर अग्रसर है। विहार मार्ग में भी साध्वीवृंद ने अनेक लोगों को नैतिकता, नशामुक्ति तथा सद्भावना की प्रेरणा प्रदान की।

अपने जीवन को साधना से तेजस्वी बनाएँ

सूर्यनगर।

साध्वी अणिमाश्री जी का उपनगरों में भ्रमण के क्रम में सूर्यनगर में पदार्पण हुआ। ज्ञान, ध्यान की दृष्टि से पंच दिवसीय प्रवास विशेष फलदायी रहा। इस प्रवास में साध्वीश्री जी का द्वि-दिवसीय प्रवचन स्थानक में एवं द्वि-दिवसीय प्रवचन विद्या भारती स्कूल के सुरम्य प्रांगण में हुआ। विद्या भारती स्कूल प्रांगण में साध्वीश्री जी ने सकल समस्या समाधायक अनुष्ठान करवाया, जिसमें विशाल उपस्थिति ने मंत्रोच्चार से उत्पन्न विशिष्ट ऊर्जा का अनुभव किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि संत आगम सुक्त के आधार पर विचरण करते हैं। अपनी साधना जागरूकता के साथ करते है किंतु श्रावक समाज को दिशा बोध देने एवं उनके आत्म उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। पूज्य गुरुदेव ने महत्ती कृपा कर इस बार हमें दिल्ली महानगर में काम करने का अवसर प्रदान किया है। दिल्ली में विचरण करते-करते सूर्यनगर में प्रवेश हुआ है। हम अपने जीवन को सूर्य की तरह तेजस्वी बनाएँ।

हम हमारी संसारपक्षीय भानजी अशोक-अंजु नाहटा के निवास में आए हैं। अच्छी सेवा की है, करती रहे। पूरा श्रावक समाज हमारे प्रवास का खूब लाभ उठाए।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी एवं तत्त्वज्ञान का प्रशिक्षण दिया। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने रात्रिकालीन कार्यक्रम का संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने गीतों की धार बहाई। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने आगम-वाणी का रसपान कराया।

विद्या भारती स्कूल के सेक्रेटरी आलम अली ने साध्वीश्री जी का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारी स्कूल में ऊर्जाप्रदायी अनुष्ठान करवाकर नई ऊर्जा का संचार किया है। महेंद्र घीया, अशोक नाहटा, सीमा खन्ना, गाजियाबाद सभा के अध्यक्ष सुशील सिपानी ने विचार व्यक्त करते हुए प्रवास के लिए अहोभाव प्रकट किया।

अंजु नाहटा, अभिषेक सेठिया, अशोक, आयुष, हर्षा नाहटा ने स्वागत गीत गाया। भीखमचंद सुराणा, करण चोरड़िया, अशोक नाहटा, अनिल लुणिया, महेंद्र घीया ने लाभ दिराने के लिए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

मुनि शांतिप्रिय ने संथारा ग्रहण किया

भीलवाड़ा।

जैन साधक का अंतिम मनोरथ रहता है संथारा। संथारा यानी आजीवन अन्न का त्याग, जैन धर्म में संथारे का सर्वाधिक महत्त्व है। श्रावक हो या साधु सभी की अंतिम इच्छा रहती है कि मेरे जीवन में संथारा या संलेखना आ जाए। इसी लक्ष्य से ओतप्रोत होकर देवरिया निवासी डीसा प्रवासी शांतिलाल बोरदिया ने २००८ में ७२ वर्ष की उम्र में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी से जयपुर चातुर्मास में अपने विशाल एवं संपन्न परिवार को छोड़कर मुनि दीक्षा ग्रहण कर १५ वर्षों तक पदविहार कर आत्मकल्याण के साथ जन कल्याण का काम किया। ८८ वर्षीय मुनि शांतिप्रिय ने आचार्य महाश्रमण जी की अनुमति से उच्च मनोभाव से दिनांक २७ मई, २०२३ को तिविहार संथारा ग्रहण किया। मुनि पारस कुमार जी ने संतों एवं समाज की उपस्थिति में मुनि शांतिप्रिय को आजीवन अनशन कराया।

मुनिश्री की सेवा में हिसार से मुनि पदम कुमार जी एवं कांकरोली से मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने यथाशीघ्र पहुँचकर बड़ी जिम्मेदारी एवं जागरूकता से अगलाव भाव से शांति मुनि जी की सेवा कर रहे हैं। संथारे के तीसरे दिन शासनश्री मुनि हर्षलाल जी एवं मुनि यशवंत कुमार जी शास्त्री नगर से विहार कर आर०सी० व्यास कॉलोनी में जयाचार्य भवन पधार कर शांति मुनिश्री को दर्शन देकर उन्हें जीवन में लगी कोई भी दोष अतिचार की आलोयणा अर्थात् प्रायश्चित देकर शुद्ध किया।

इस अवसर पर तपस्वी मुनि प्रतीक कुमार जी एवं मुनि मोक्ष कुमार जी विशेष रूप से उपस्थित थे। बोरदिया परिवार सेवा में तत्पर है। मुनिश्री का संथारा उत्तरोत्तर प्रवर्धमान है। सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने बताया कि जयाचार्य भवन में संथारे की अनुमोदना में निरंतर जप, तप, भजन संध्या हो रही है। तेरापंथ सभाध्यक्ष जसराज चोरड़िया चिकित्सा प्रभारी गौतम दुगड़, भिक्षु विहार के अध्यक्ष दिलीप मेहता आदि का सराहनीय सहयोग मिल रहा है। संथारा ग्रहण मुनि शांति प्रिय के दर्शनार्थ श्रावक समाज की चहल-पहल परे दिन रहती है।

तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति ये सभी संस्थाएँ अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण जागरूक हैं। संथारा शुभ भावों के साथ अतिशीघ्र आत्मोत्थान को प्राप्त हो ऐसी मंगलकामनाएँ की जा रही हैं। बच्चों, महिलाओं, युवकों ने संथारे के उपलक्ष्य में कुछ संकल्प ग्रहण किए हैं। आपका संथारा उच्च भावों के साथ प्रवर्धमान हो।

सामायिक कार्यक्रम का आयोजन

सरदारपुरा।

अभातेयुप की शाखा तेयुप, सरदारपुरा द्वारा फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत सामूहिक योग का आयोजन किया गया। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत पाल रोड स्थित अशोक उद्यान में युवाओं की तंदरूस्ती के लिए विभिन्न व्यायाम कराए गए। इस अवसर पर लगभग १५ युवाओं सहित ३५ से अधिक लोगों की उपस्थिति रही।

नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष कैलाश जैन ने बताया कि योग कार्यक्रम के पश्चात सभी युवकों ने तेरापंथ भवन, अमरनगर में साध्वी कुंदनप्रभा जी आदि के सान्निध्य में सामायिक का प्रयोग किया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने युवकों को ध्यान का महत्त्व बताया और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। साध्वीश्री द्वारा युवा पीढ़ी की धर्म और अध्यात्म से संबंधित जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

नवनियुक्त मंत्री मिलन बांठिया ने बताया कि तेयुप द्वारा प्रत्येक रविवार को योग व सामायिक का आयोजन किया जाएगा। जिसमें युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु योगा, ध्यान, स्वाध्याय व तत्त्व जिज्ञासा का क्रम चल सकेगा।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कैलाश तातेड़, ऋषभ श्यामसुखा, सतीश बाफना, रतन चोपड़ा, जीतेंद्र गोगड़, गौरव बरमेचा, रोहित जीरावला, अभिषेक संचेती, मनसुख संचेती, सुमित बुरड़, धीरज बैंगानी, मनोज तातेड़ आदि की उपस्थिति रही।

आचार्यश्री तुलसी विराट पुंज थे

चामराजपेट, बैंगलोर।

बैंगलुरु के चामराजपेट स्थित आदर्श कॉलेज ऑडिटोरियम में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी २७वें महाप्रयाण दिवस पर विसर्जन दिवस का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगर द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी विराट पुंज व्यक्तित्व थे। वे कीर्तिमान पुरुष थे। तेरापंथ के आचार्य में वे अब तक के सबसे छोटी उम्र के आचार्य बने और सबसे लंबे समय तक आचार्य पद पर रहे। आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ को, जैन धर्म को एवं मानवता को अभिनव देन दी। उन्होंने नारी उन्नयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूढ़ि उन्मूलन कार्यक्रम के माध्यम से पर्दा प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवाओं को दी जाने वाली नारकीय यातनाएँ आदि का खुलकर प्रतिकार किया।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का भाग्य प्रबल था और पुरुषार्थ में उनका गहरा विश्वास था। उन्होंने जो और कहा, वह करके दिखाया।

स्वामी चित्रगुणानंद जी ने कहा कि आज मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर बोलने का अवसर मिल रहा है।

कार्यक्रम का आरंभ महिला मंडल की बहनों ने तुलसी अष्टकम से किया। तेमम, विजयनगर के अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने स्वागत भाषण दिया। अभातेमम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पूर्व महामंत्री वीणा बैद, तेरापंथी सभा विजयनगर के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचार रखे।

आभार ज्ञापन तेमम, विजयनगर की मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। अभोमम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया एवं शशि नाहर की गरिमामय उपस्थिति रही। संचालन ममता मांडोत ने किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

बालिका संस्कार निर्माण शिविर

सरदारपुरा।

तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान और स्थानीय सभा, सरदारपुरा की आयोजना में संस्कार निर्माण शिविर का प्रारंभ संस्कार इंटरनेशनल स्कूल में हुआ।

डॉ० समणी मंजुप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित हुए उद्घाटन सत्र में महासभा के उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, महासभा पंचमंडल सदस्य दिलीप सिंघवी, सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, पूर्व अध्यक्ष मानक तातेड़, सभा मंत्री महावीर चोपड़ा, निर्मल बैद, सुरेंद्र बैद, शिविर संयोजिका कनक बैद, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया, गणमान्य प्रदीप, तेयुप, सरदारपुरा अध्यक्ष कैलाश तातेड़, उपाध्यक्ष निर्मल छल्लाणी, विद्यालय व्यवस्थापिका स्वाति मेहता उपस्थित थे।

उद्घाटन सत्र में प्रेम धणदे अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त महिला अपराध एवं अनुसंधान सेल आयुक्तालय, जोधपुर पश्चिम ने उपस्थित होकर बालिकाओं को संबोधित किया और उत्साहवर्धन किया।

इस शिविर में जोधपुर सहित बालोतरा, बायतु, असाडा फलसूंड, पाली, पारलू आदि क्षेत्रों से लगभग २०० कन्याओं ने भाग लिया है। शिविर से बच्चों में भारतीय संस्कृति के अनुरूप संस्कार आए, उसके लिए विभिन्न सत्रों का आयोजन होगा। कोलकाता से मोटिवेशनल स्पीकर जयश्री डागा, अहमदाबाद व जोधपुर योगा ट्रेनर के साथ विभिन्न वक्ता शिविरार्थियों को संबोधित करेंगे।

इस अवसर पर तेयुप, महिला मंडल व कन्या मंडल के कार्यकर्ता व्यवस्था में सहयोगी बने हुए हैं।

इस अवसर पर तेयुप, महिला मंडल व कन्या मंडल के कार्यकर्ता व्यवस्था में सहयोगी बने हुए हैं।

✦ *दीर्घ जीवन पाने की कामना से पूर्व यह संकल्प करो कि मैं परोपकारयुक्त जीवन जीऊँगा।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *तात्कालिक लाभ को अधिक महत्त्व मत दो। धैर्य रखो व दीर्घकालिक लाभ पर चिंतन को केंद्रित करो।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मानवीय मूल्यों के पुरोधा आचार्यश्री तुलसी

कांकरोली।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में नरेंद्र बैद (पड़िहारा), आयोध्यापुरी १०० फीट रोड के प्रवास में आचार्यश्री तुलसी की २७वीं पुण्यतिथि के कार्यक्रम का समायोजन हुआ।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि भारत वसुंधरा का सौभाग्य है जहाँ आचार्यश्री तुलसी एक देदीप्यमान सूर्य बनकर आए। वे एक तुल्य महापुरुष थे। जननायक, महानायक गुरुदेव एक महान परिव्राजक थे। उन्होंने दो कदमों से हिंदुस्तान में पदयात्राएँ करते हुए एक लाख किलोमीटर का सफर तय किया।

गणाधिपति की संघनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा को देखकर लोग दाँतों तले अंगुली दबाते थे। उनकी कार्यशैली इतनी शानदार थी कि पूज्य गुरुवर की एक झलक पाने के लिए हजारों की भीड़ प्रतीक्षा करती। विश्व के महान संत ने पद का विसर्जन करके वो आश्चर्य दिखा दिया जो सभी कुर्सी वालों के लिए एक क्रांतिकारी सोच का सकारात्मक हस्ताक्षर है।

वे एक प्रवचनकार, साहित्यकार थे। रचनाकार और संगीतकार थे। कलाकार और संपादनकार थे। तीर्थंकर अनुहार तारणहार थे।

कार्यक्रम में साध्वी विनम्रयशा जी ने 'जाप' करवाया और साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने 'ध्यान' करवाया।

तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्ष साधना चोरड़िया ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम में साध्वी विनम्रयशा जी ने 'कविता' के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की।

साध्वी डॉ० परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने डॉ० साध्वी परमयशा जी द्वारा रचित गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष प्रकाश सोनी, अभिरुचि चपलोत ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

नीता सोनी ने 'कन्यादान क्यों' इस विषय पर अपने उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन ममता मालू ने किया और आभार ज्ञापन तेममं की मंत्री मनीषा कच्छारा ने किया।

सकारात्मक चिंतन वीतरागता का प्रतीक है

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में 'कैसी हो हमारी जीवन शैली' विषय पर कार्यशाला का आयोजन उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभा एवं अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन परम मूल्यवान है। ऐसे तो दुनिया में हर चीज का मूल्य होता है। किंतु जीवन का मूल्य सर्वोपरि है। हमें ६ घाटियाँ पार करने के बाद मानव भव मिला है। ऐसे हर मनुष्य जीवन जीता है। जीवन जीना एक बात है, 'कलात्मक ढंग से जीवन जीना दूसरी बात है। जीवन शैली का पहला सूत्र है—सकारात्मक चिंतन। सकारात्मक चिंतन वीतरागता का प्रतीक है। हमारा लक्ष्य बने वीतरागता राग-द्वेष से जो मुक्त होता है वह वीतराग होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि अच्छी जीवनशैली के लिए अहिंसा जरूरी है। अहिंसा से मैत्री, करुणा का विकास होता है, वैरभाव समाप्त होता है। आभामंडल पवित्र होता है, उपशम, समानता श्रम संस्कार, साधार्मिक वात्सल्य, आहार शुद्धि, व्यसन मुक्ति, सादगी, संयम, जीवन शैली के लिए यह उपयोगी सूत्र है।

इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति हावड़ा एवं उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभा के कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुविभा सोसायटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने विचार रखे। उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष मनोज सिंधी व श्रीरामकृष्ण सेवा समिति की ओर से ट्रस्टी हरिहर प्रसाद अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त किए।

आभार ज्ञापन सभा मंत्री सुरेंद्र बोथरा ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। तेरापंथ सभा द्वारा गणमान्य व्यक्तियों का सम्मान किया गया।

संस्कार निर्माण कार्यशाला का आयोजन

अमराईवाडी।

मुनि मदन कुमार जी के सान्निध्य में एवं मुनि सिद्धार्थ कुमार जी के निर्देशन में तेममं, अमराईवाड़ी द्वारा संस्कार निर्माण कार्यशाला का आयोजन सिंघवी भवन में किया गया।

कार्यशाला की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं सभी धर्म परिवार का शब्दों द्वारा स्वागत किया एवं विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ० मुनि मदन कुमार जी स्वामी ने कहा कि वर्तमान युग भौतिक युग है इस भौतिक युग में भौतिकता की चकाचौंध में हमें अपने संस्कारों की सुरक्षा करनी है, संस्कारों का बीजारोपण गर्भ काल से ही हो जाना चाहिए। संस्कारों की संपदा है, उत्कृष्ट अमूल्य।

संस्कारों का जीवन में बड़ा महत्त्व होता है, जो व्यक्ति सहनशीलता, विनम्रता और कृतज्ञता इन तीन गुणों को जीवन में आत्मसात कर ले तो उसका जीवन अच्छा बन सकता है। वो उत्कृष्ट जीवन जी सकता है।

उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा ने शुभ संस्कार, सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र, देव, गुरु, धर्म आदि के बारे में बताया।

कन्या मंडल ने लघु नाटिका द्वारा एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने एक्शन सॉन्ग के द्वारा प्रस्तुति दी। उपासिका मंजु गेलड़ा, सेजल मांडोत, मंडल की मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया, सज्जन लाल सिंघवी, सभा के अध्यक्ष रमेश पगारिया, मंत्री गणपत हिरण, सुरभि चंडालिया, महिमा बाफना एवं रिंकु सिंघवी ने कविता, दो शब्द आदि के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए।

मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने संचालन किया एवं आभार ज्ञापन मंडल की उपाध्यक्ष शशि ओस्तवाल ने किया। कार्यक्रम में सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला सभी की अच्छी उपस्थिति रही।

विराट व्यक्तित्व के धनी थे आचार्यश्री तुलसी

मानसरोवर हाइट।

राष्ट्रसंत अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी की २७वीं पुण्यतिथि के अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में विसर्जन दिवस का आयोजन मानसरोवर हाइट में किया गया। यह कार्यक्रम अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में हैदराबाद तेममं द्वारा आयोजित किया गया। आचार्यश्री तुलसी द्वारा राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के दिए गए योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी विराट व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अणुव्रत की बुहारी लेकर देश की आंतरिक शुद्धि का बीड़ा उठाया। वह किसी जाति, संप्रदाय कौम से संबद्ध नहीं है। उनकी कल्याणी भावना ने पूरे भारत की भूमि को सौहार्द, सद्भावना से सींचा लगभग ७५ वर्षों तक भारतीय परंपरा की निर्वहन करते हुए उन्होंने मानव जाति को नई सोच, नए संकल्पों एवं नए अवदानों को समृद्ध किया। आजाद भारत के चारित्रिक निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला की ज्ञानार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। पंकज बैद ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। प्राची नाहटा, संपत नौलखा ने आचार्यश्री के नया मोड, समण श्रेणी, जैन विश्व भारती इत्यादि अवदानों की चर्चा की। निष्ठा नाहटा, अभिषेक नाहटा ने गीतिका के द्वारा अपने आराध्य की आराधना की। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती, तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती ने संपूर्ण युवा शक्ति की ओर से आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने काव्य स्वरांजलि द्वारा एवं साध्वी डॉ० राजूलप्रभा जी ने अनुभवात्मक भाषण द्वारा आचार्य तुलसी को श्रद्धांजलि अर्पित की। महिला मंडल एवं छाजेड़ परिवार ने सामूहिक रूप से गीतिकाओं की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने गीतिकाओं के माध्यम से गुरु तुलसी का आह्वान किया।

संयमपूर्ण जीवनशैली सुखी जीवन का रहस्य

इस्लामपुर।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मारवाड़ी युवा मंच एवं एकता शाखा द्वारा तनाव मुक्त जीवन शैली कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि तनाव के अनेक कारण हैं। जो तनाव में जीता है, उसे पता होता है कि तनाव के कितने कारण होते हैं। आज की जिंदगी प्रतिस्पर्धा की है, भाग-दौड़ की जीवनशैली, आगे बढ़ने की अंधी दौड़ है, होड़ में व्यक्ति दूसरों को गिराकर आगे बढ़ना चाहता है। जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं तो सही रास्ते से आगे बढ़ें। अपनी योग्यता बढ़ेगी तो व्यक्ति सफलता के मुकाम पर पहुँच जाता है। व्यक्ति को न तो हीन भावना में रहना चाहिए और न ही उच्च भावना में रहना चाहिए।

क्रोध हमारे जीवन में अशांति का एक प्रमुख कारण है। क्रोध के कारण हम अपने व्यवहार और आचरण में ठीक से बर्ताव नहीं कर पाते हैं। हमारी सोच का प्रभाव हमारे व्यवहार पर पड़ता है। व्यवहार ही व्यक्ति की पहचान है। सुखी जीवन का रहस्य इंद्रियों का संयम है। सर्वेन्द्रिय संयम का प्रयोग व्यक्ति को तनाव मुक्त बनाता है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि आज के समय में हर व्यक्ति तनाव में जी रहा है। छोटे बच्चे से लेकर बड़े तक तनाव को अपना साथी बना लिया है। तनाव से मुक्त जीवन जीने के लिए अपनी चिंतन को सकारात्मक बनाएँ। ध्यान के प्रयोग के द्वारा शांति, सुकून का जीवन जिएँ। वर्तमान में जीने का प्रयास करें। व्यक्ति भूत और भविष्य के चिंतन में वर्तमान का आनंद भूल जाता है। तनाव में व्यक्ति की सोचने, समझने, निर्णय लेने की और विवेक की शक्ति नष्ट हो जाती है। आनंदपूर्ण जीवन जीने के लिए साधन नहीं बल्कि साधना की आवश्यकता होती है।

तेयुप के मंत्री मुदित पींचा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। मारवाड़ी युवा मंच अध्यक्ष सत्यनारायण अग्रवाल, पश्चिम बंगाल सिक्किम प्रांतीय अध्यक्ष मोहित अग्रवाल, एकता साखा अध्यक्ष प्रियंका भंडारी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ युवा वाहिनी के राष्ट्रीय प्रभारी विकास बोथरा ने किया।

गुजरात स्तरीय तेरापंथ टास्क फोर्स कैंप

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में तेयुप, अहमदाबाद द्वारा आयोजित गुजरात स्तीयय तेरापंथ टास्क फोर्स कैंप का उद्घाटन सत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान शिष्य मुनि डॉ० मदन कुमार जी एवं मुनि सिद्धार्थ कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

मुनिश्री ने उद्घाटन सत्र की शुरुआत महामंत्र नमस्कार के साथ की। तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्यश्री महाश्रमण युवा पुरस्कार से सम्मानित तेयुप के प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने अपने भाव व्यक्त किए। अभातेयुप तेरापंथ टास्क फोर्स के राष्ट्रीय प्रभारी मनीष पटावरी ने तेरापंथ टास्क फोर्स क्या है उसकी विस्तृत जानकारी दी एवं कैंप के सभी संभागी को बताया तेयुप, अहमदाबाद के शाखा प्रभारी दीपक ने तेयुप एवं पधारे सभी संभागी का आभार प्रेषित किया।

अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी ने तेयुप, अहमदाबाद को इस आयोजन के लिए बधाई प्रेषित की एवं सभी संभागी को जीवन में आगे से आगे बढ़ें और नई ऊँचाई प्राप्त करें, ऐसे विचार व्यक्त किए।

मुनि डॉ० मदन कुमार जी ने धर्म को बताते हुए आचार्य भिक्षु ने जो संदेश दिया उसे आचार्य तुलसी ने संपूर्ण समाज में सरलता के साथ श्रावकों को समझाया एवं वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी अणुव्रत यात्रा के तहत नशामुक्ति, नैतिकता, सद्भावना की प्रेरणा देते हुए स्वयं एवं समाज में युवाओं की क्या भूमिका होनी चाहिए सभी युवाओं को मार्गदर्शन दिया।

मुनि सिद्धांत कुमार जी के निर्देशन में यह आयोजन सफल बनाने में सभी अहमदाबाद अभातेयुप सदस्य अहमदाबाद तेरापंथ किशोर मंडल प्रभारी, संयोजक एवं तेयुप, अहमदाबाद सभी पदाधिकारीगण एवं टीटीएफ इस कार्यक्रम के संयोजक वैभव कोठारी, अभिषेक धूपिया, विनय बाफना, रवि बालड़ एवं युवा सभी कांति दुगड़ का विशेष श्रम रहा। गरिमामय उपस्थिति टीटीएफ राज्य प्रभारी गौतम बाफना की रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप, अहमदाबाद मंत्री दिलीप भंसाली ने किया।

मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन

अमराईवाड़ी।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अमराईवाड़ी द्वारा मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन एटीडीसी, अमराईवाड़ी पर किया गया। जैन संस्कारक दिनेश टुकलिया ने नवकार मंत्र से कैंप की शुरुआत की।

कैंप में बेजीक बॉडी प्रोफाइल एवं फुल बॉडी प्रोफाइल के दो पैकेज रखे गए। रेंडम ब्लड शूगर की रिपोर्ट मुफ्त रखी गई। कैंप के शुभेच्छक के रूप में प्रकाशचंद्र, कैलाशचंद्र, सुरेशचंद्र बाफना परिवार का पूरा सहयोग मिला। कैंप में ६१ सदस्यों ने भाग लिया।

कैंप को सफल बनाने में एटीडीसी संयोजक कैलाश बाफना एवं मुकेश सिंघवी तथा पूरी एटीडीसी टीम का विशेष श्रम रहा।

कैंप में सोशियल मीडिया टीम के जयेश सिंघवी एवं हितेश चपलोत का विशेष श्रम रहा। समस्त एटीडीसी टीम ने बाफना परिवार को शॉल एवं माला से सम्मानित किया गया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का दीक्षांत समारोह

राजाजीनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेयुप, राजाजीनगर की ओर से आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह जे०पी०पी० जैन समणी सेंटर श्रीरामपुरम में तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

दीक्षांत समारोह का विधिवत आगाज अध्यक्ष द्वारा किया गया तत्पश्चात तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम ने विजय गीत का संगान किया, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अध्यक्ष ने सभी का स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की।

सप्त दिवसीय कार्यशाला में प्रथम २ दिन का प्रशिक्षण जोनल ट्रेनर दिनेश मरोठी द्वारा अगले दो दिवसीय जोनल ट्रेनर महावीर भटेवरा द्वारा एवं आखिर के २ दिन नेशनल ट्रेनर रक्षा मांडोत ने विभिन्न वक्तव्य कला को सिखाया। सभी ३० प्रतिभागियों ने अपने वक्तव्य से उपस्थित श्रोताओं को ओत-प्रोत किया। नेशनल ट्रेनर रक्षा मांडोत ने विशेष पाँच प्रतिभागियों की घोषणा की जिनमें चक्षु बाबेल, ईशा बाबेल, पायल देरासरिया, आशा दक एवं स्नेह टेबा को अच्छे वक्तव्य हेतु पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर सीपीएस मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़ की गरिमामय उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा ट्रस्ट से उपाध्यक्ष अशोक चोधरी, विमल पितलिया, मंत्री मदनलाल बोराणा, कोषाध्यक्ष हंसराज चौधरी, जेपीपी जैन समणी सेंटर के अध्यक्ष रेंवतमल नाहर, जैनम लक्ष्मीनारायणपुरम ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश सियाल एवं प्रबंध मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही। अभार तेयुप, राजाजीनगर सहमंत्री रनीत कोठारी ने व्यक्त किया।

फिट युवा हिट युवा

सरदारपुरा।

अभातेयुप की शाखा तेयुप, सरदारपुरा द्वारा फिट युवा, हिट युवा का आयोजन किया गया। इसके पश्चात तेरापंथ भवन अमरनगर में साध्वीश्री जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान का अभ्यास कराया और तत्त्वज्ञान के बारे में बताया।

तेयुप, सरदारपुरा द्वारा फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत सम्राट अशोक उद्यान में शारीरिक तंदरुस्ती के लिए विभिन्न व्यायाम किए गए।

तेरापंथ भवन अमरनगर में साध्वीश्री के सान्निध्य में युवक परिषद ने प्रेक्षाध्यान का अभ्यास किया और तत्त्व ज्ञान के बारे में समझा एवं सामायिक भी किया।

तेयुप सरदारपुरा द्वारा दोनों आयाम 'हिट युवा-फिट युवा' सामायिक साधना के साथ २५ बोल सीखने का क्रम जारी रहेगा।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कैलाश तातेड़, मंत्री मिलन बांठिया, निर्मल छल्लानी, जीतेंद्र गोगड़, ऋषभ श्यामसुखा, देवीचंद तातेड़, विदित, चमन बांठिया, रोहित जीरावला, धीरज बैंगानी, सिद्धार्थ रांका, मनसुख संचेती आदि की उपस्थिति रही।

इंद्रियों का संयम व सदुपयोग...

(पृष्ठ १२ का शेष)

हम इंद्रियों का संयम रखें। इनका विशेष संयम करके भीतर में रहने का कुछ प्रयास कर सकते हैं। सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा का प्रयोग करें। राग-द्वेष से बचने का प्रयास करें तो इंद्रिय संयम की साधना हो सकती है। रहो भीतर, जीयो बाहर। हम शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श रूपी इंद्रिय जगत में रहकर भी भीतर में रहने का प्रयास करें। हम इंद्रियातीत बनने का प्रयास करें। हम निर्लेप रहने का प्रयास करें, यह कल्याणकारी हो सकता है।

आज शिक्षा से जुड़े स्थान में आए हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी से जुड़ा फाउंडेशन है। आदमी आगे बढ़े तो विकास हो सकता है। जैसे घड़े से पैदा होने वाला अपने आप में पूरे समुद्र को समा लेता है, वैसे ही यह कॉलेज और विकास करे। यहाँ ज्ञान के साथ अच्छे संस्कारों का निर्माण हो।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ में गुरु दृष्टि ही सर्वोपरी है। तेरापंथ की प्रगति का सबसे बड़ा हेतु है—अनुशासन, विनम्रता और गुरु के प्रति सहज समर्पण का भाव। विनीत वह होता है, जो गुरु के इंगित और आकार को समझता है, गुरु की सुश्रुषा करता है, गुरु आज्ञा का पालन करता है।

बोइसर प्रवास के दूसरे दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अनंतर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी काम्बल गाँव स्थित आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन में पधारे। किशनलाल डागलिया की अर्ज पर परम पावन इस फाउंडेशन के परिसर में पधारे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अभातेयुप व संस्था उन्होंने के भूतपूर्व अध्यक्ष किशन डागलिया जो इस फाउंडेशन के अध्यक्ष भी हैं, ने फाउंडेशन की पूरी जानकारी दी। उन्होंने इस संस्थान का नामकरण पूज्यप्रवर के नाम से करने की अपनी भावना श्रीचरणों में अर्ज की। गुलाबचंद चोरड़िया, व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, युगराज जैन ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। युगराज जैन के गीत की प्रस्तुति हुई। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने भावना अभिव्यक्त की। दक्षिण मुंबई ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति भी हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

स्वागत अभिनंदन समारोह

चेन्नई।

साध्वी लावण्यश्री जी, साध्वी सिद्धार्थश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी, चेन्नई के उपनगरीय क्षेत्रों को परसते आज केएलपी अभिनंदन एपार्टमेंट पधारे। केएलपी की बहनों ने अपनी धरा पर साध्वीश्री जी का स्वागत गीतिका के माध्यम से किया। नीरज गोगड़ ने भी बहुत गीतिका के माध्यम से साध्वीश्री जी का स्वागत किया।

साध्वी सिद्धार्थश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने सुंदर गीतिका का संगान किया। पूरा वातावरण ॐ अर्हम् की ध्वनि से गुंज उठा, साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि आज हम चेन्नई के उपनगरीय क्षेत्रों के क्रम में केएलपी पधारे हैं, यहाँ की भावनाओं और उपस्थिति को देखकर लग रहा है जैसे चातुर्मास प्रवेश कर रहे हैं।

साध्वी लावण्यश्री जी ने १० पाप का महत्त्व समझाया और तत्त्वज्ञान की भी चर्चा-परिचर्चा प्रवचन में रही और साध्वीश्री जी ने चातुर्मास में ज्यादा से ज्यादा जप-तप-स्वाध्याय करने की भी सभी को प्रेरणा दी।

तेरापंथ सभा, अध्यक्ष उगमचंद सांड, पूर्वा अध्यक्ष विमल चिप्पड़, तरुण दुगड़ ने भी अपनी भावनाएँ रखीं, कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों की भी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन शांति दुधोड़िया ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मनोज गादिया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 जून, 2023

✦ *काम अच्छा करो। प्रशंसा पाने का प्रयास मत करो। प्रशंसा के क्षणिक सुख के लिए शाश्वत सुख से दूर मत बनो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन में क्षण मात्र का प्रमाद न करें : आचार्यश्री महाश्रमण

केलवे रोड, (महाराष्ट्र)
३ जून, २०२३

साम्य योगी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने धर्मसभा को पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें श्लोक से हमें प्रमाद न करने का संदेश मिलता है। प्रमाद क्यों नहीं करना, उसका आधार बताया गया है कि मनुष्य-भव दुर्लभ है। लंबे काल तक यह प्राणियों को उपलब्ध नहीं होता है।

इसलिए क्षण मात्र प्रमाद नहीं करना चाहिए। इतने जागरूक रहो कि पाप से बचा जा सके। समय का सामान्य अर्थ है कि काल की लघुत्तम इकाई है वो समय है। बहुत ही सूक्ष्म एक कालावधि है, जिसे विज्ञान भी नहीं पकड़ सका है।

साधु में सातवाँ अप्रमत्त गुणस्थान तो कभी-कभी आ सकता है, पर ज्यादा देर टिकता नहीं है। बार-बार मेरे में आ जाए ऐसा प्रयास करें। कषाय आश्रव और प्रमाद आश्रव से साधु को व्रत में त्याग भंग रूप में कोई दोष नहीं लगता है। दोष लगता है अशुभ योग आश्रव से। हम इस अशुभ योग से बचने का प्रयास करें।

उड़ीसा में हुए रेल हादसे से समझें कि जीवन का कोई भरोसा नहीं है। हादसे में पीड़ितों की मदद भी की जा रही है। मुनि शांतिप्रिय जी और मुनि अजय प्रकाश जी का मेवाड़ में संथारा चल रहा है। संथारे में आध्यात्मिक सेवा का जितना योगदान दे सकें, देने का प्रयास करें। शारीरिक योगदान की अपेक्षा हो तो वो भी दें। साधु व साध्वियाँ आपस में बाह्य सहयोग भी कर सकते हैं।

सुविधा के साथ कभी-कभी दुविधा वाली बात भी हो सकती है। नियति का योग समझो दुर्घटना हो गई। लौकिक सेवा भी हो। सेवा ही धर्म है। विशेष व्यक्तियों के लिए विशेष व्यवस्था का ध्यान रखें। मानव जीवन दुर्लभ है, इसका आध्यात्मिक साधना में उपयोग करें।

साधुपन प्राप्त होना तो कितनी ऊँची बात है। मेरा साधुपन, मेरा संघ और मेरे गुरु मुझे प्यारे हैं। इनके प्रति हमारी निष्ठा रहे। इनसे हमारा मानव जीवन सार्थक हो सकता है।

आज चतुर्दशी है। पूज्यप्रवर ने तेरापंथ की मर्यादाओं के बारे में प्रेरणाएँ और स्फूरणाएँ फरमायी। शरीर का स्वस्थ होना जीवन की एक उपलब्धि है। दूसरी उपलब्धि है कि चित्त-प्रसन्न रहे। नींद भी आना एक उपलब्धि है। मनोबल हमारा अच्छा रहे। घबराएँ नहीं। संथारे की अनुमोदना में कुछ त्याग करें। लेख पत्र का सामूहिक वाचन हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हम अमृत का पान कर रहे थे। अमृत पान करने के बाद ये जिज्ञासा होती है कि अमृत कहाँ रहता है। अपने-अपने मत हो सकते हैं। भगवान के उपासक के कंठ में अमृत का वास होता है। महापुरुषों के कंठ में अमृत होता है। उनकी साधु क्षारिणी वाणी मन को अच्छी लगती है।

पूज्यप्रवर अमृत पुरुष हैं, इनके वचन कभी खाली नहीं जाते। पूज्यप्रवर में भगवद्-भक्ति है। आचार्यप्रवर अर्हत् वाणी के प्रति समर्पित हैं, अटूट आस्था है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में भगवती लाल राठौड़, शिवसेना प्रवक्ता विनोद व अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। खुशी कावड़िया, हनी मांडोत, पिंकी मांडोत आदि ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने गाँववालों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मनुष्य में ज्ञान व सद्गुणों का विकास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

पालघर, २ जून, २०२३

मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। अध्यात्म के क्षेत्र और व्यवहार के साथ ही समाज के क्षेत्र में भी ज्ञान का महत्त्व है। ज्ञान कुछ भीतर से पैदा हो सकता है, तो स्वाध्याय व अध्ययन के द्वारा भी अर्जित किया जा सकता है।

जीवन का एक पक्ष है—ज्ञान और दूसरा पक्ष है—आचार। विद्यालयों में ज्ञान दिया जाता है। विद्यार्थियों में कोरा ज्ञान ही नहीं, अच्छे संस्कार भी पुष्ट हों। ज्ञान और आचार दोनों अच्छे हैं, तो आदमी को अच्छी संपदा प्राप्त हो गई। बाहरी सौंदर्य कम महत्त्वपूर्ण है। उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि ज्ञान का सौंदर्य कितना है। विद्वता-पांडित्य और चारित्र कितना सुंदर है, उसका महत्त्व है।

रूप का मूल्य कम है, गुणवत्ता का मूल्य ज्यादा है। आदमी में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। आदमी जन्म से नहीं कर्म से बड़ा बनता है। हमारे जीवन में ज्ञान का वैदुष्य बढ़े और साथ में सद्गुण संपन्नता हो। इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान है। सबसे मैत्री भाव रखें। मंच के नीचे बैठने वाला भी महान व्यक्ति बन सकता है।

अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान से आदमी महानता की दिशा में आगे बढ़ सकता है। मानव जन्म दुर्लभ बताया गया है, वो हमें उपलब्ध है, इसका अच्छा उपयोग करना चाहिए। संतों की संगति करें, अच्छा साहित्य पढ़ें। आदमी के जीवन में एक संयम आ जाए तो गुणों का विकास हो सकता है।

किसी धर्म, जाति या देश का व्यक्ति क्यों न हो, जीवन में सद्गुणता है, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र है, वो अच्छा व्यक्ति हो सकता है। महान आत्मा वाला महात्मा ही होता है। ज्ञान और आचार का हमारे जीवन में विकास हो, फिर कपड़े कैसे भी हों, जीवन में महानता रह सकती है। पालघर में भी सबमें सद्गुण संपन्नता का विकास हो।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि संसार में दुखों की शृंखला-सी चल रही है। जन्म, जरा-रोग, बुढ़ापा और मृत्यु दुःख हैं। पर संसार रूपीवृक्ष के दो फल अमृत के समान हैं—(१) काव्य के रस का आस्वाद लेना, (२) सज्जन व्यक्तियों की सन्निधि। सत्-संगत तो अपूर्व दीपक है। जो पुण्योदय से उपलब्ध होता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष देवीलाल सिंघवी पालघर नगराध्यक्षा उज्ज्वला काले, आमदार श्रीनिवास, वणगा, मौलाना शंकर हक, स्थानकवासी समाज से शांतिलाल जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, अणुव्रत समिति द्वारा आगंतुक मेहमानों का सम्मान किया गया। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। अणुव्रत एक्सप्रेस के ११ कोचों का प्रदर्शन हुआ। पूज्यप्रवर ने नशामुक्ति के संकल्प करवाए। अनेक धर्म-संप्रदाय के प्रतिनिधियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

इंद्रियों का संयम व सदुपयोग करें : शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण

बोइसर, (पालघर) १ जून, २०२३

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पास पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी होती हैं। ये पाँच ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान का साधन बनती हैं। ये इंद्रियाँ विषयों को ग्रहण करती हैं। कान के द्वारा हम शब्दों को ग्रहण करते हैं। शब्द अर्थ के संवाहक होते हैं।

शब्द और अर्थ का गहरा संबंध है। शब्द को शरीर मान लें तो अर्थ शब्द की आत्मा है। शब्द के अर्थ ग्रहण होने पर हमारे भीतर प्रतिक्रिया भी होती है। पर उस प्रतिक्रिया में राग-द्वेष में न जाएँ। श्रोतेन्द्रिय का सदुपयोग करें। बुरा सुनो मत, बुरा देखो मत, बुरा बोलो मत और बुरा सोचो मत। विकथाओं को सुनने से बचने का प्रयास करें।

अच्छे लोगों की कीर्ति और उनकी अच्छी वाणी सुनने में कान का प्रयोग करें। कहीं-कहीं कान की अपेक्षा आँख ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, व्यवहार में। आँखों का भी सदुपयोग करें। अच्छा स्वाध्याय पढ़ने व संत दर्शन में उनका उपयोग करें। हमारे विवेक का तीसरा नेत्र भी खुल जाए। घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय का भी अच्छा सदुपयोग हो। संयम रखें। वाणी संयम भी रखें।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**